संदेश

वर्ष–2015 अंक–2

बिहार भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, पटना

संदेश

वर्ष-2015

अंक-2

संरक्षक

श्री पी०वी० राजशेखर, निदेशक

परामर्श

श्री राज कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक

संपादकीय

श्री राजेश कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक

लेख संपादन

श्री बी०पी० सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक

श्री आर०के० साहू, अधिकारी सर्वेक्षक

श्री आर०एन० प्रसाद, प्रवर श्रेणी लिपिक

श्री अरूण कुमार विश्वास, प्रवर श्रेणी लिपिक

छाया चित्र

मो० शहजाद, सर्वेक्षक ❖ श्री रविकान्त, सर्वेक्षक

टंकण

मो० शब्बर अली तैयब, प्रवर श्रेणी लिपिक

श्री शिव प्रकाश, अवर श्रेणी लिपिक ❖ श्री शिवानंद झा, प्रवर श्रेणी लिपिक

पेपर सेटिंग

मो० शब्बर अली तैयब, प्रवर श्रेणी लिपिक

पत्रिका में प्रकाशित लेखों/रचनाओं में व्यक्त विचार, संबंधित अधिकारियों/कर्मचारियों के निजी विचार हैं। संपादक अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

राजेन्द्र मणि त्रिपाठी
RAJENDRA MANI TRIPATHI

भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं0 37,
देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No. – 37,
Dehradun -248001, (Uttarakhand), India

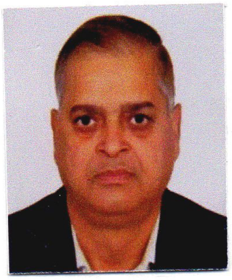

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी बिहार भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'संदेश' के दूसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

हिंदी हमारे देश की राजभाषा है । अत: हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए निरन्तर प्रयास करना हम सबका दायित्व है । इस पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए किया जा रहा प्रयास निदेशालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिंदी के प्रयोग के प्रति उनकी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है ।

मैं आशा करता हूँ कि इस पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिलेगा तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास भी होगा ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए इस पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ ।

(राजेन्द्र मणि त्रिपाठी)
भारत के महासर्वेक्षक ।

संदेश

"संदेश" के दूसरे अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है।

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि ईस क्षेत्र के अंतर्गत बिहार भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र, पटना विगत वर्ष कि तरह ईस वर्ष भी राजभाषा के प्रसार हेतु अपनी गृह पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है।

मूझे आशा है कि बिहार भू-स्थानिक आंकडा केन्द्र, कि प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी अपनी अपनी लेख के द्वारा पत्रिका को समृद्ध करेंगे।

मैं पत्रिका से जुड़े हुए सभी अधीकारियों / कर्मचारियों एवं जिनकी रचनाए प्रकाशित हुई है, बधाई देता हूं।

(आर0एम0 त्रिपाठी)
अपर महासर्वेक्षक, पूर्वी क्षेत्र

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
SURVEY OF INDIA

पी० वी० राजशेखर
निदेशक

P.V. RAJASEKHAR
Director

निदेशक का कार्यलय
बिहार भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र
Office of the Director
Bihar Geo-spatial Data Centre
164, शेखपुरा हाउस
(जे.डी. वीमेन्स कॉलेज के नजदीक)
पोस्ट- बी.भी. कॉलेज, पटना-800014
164, Sheikhpura House
(Near J.D. Women's College)
P.O.- B.V. College, Patna-800014

संदेश

मेरे लिए यह हर्ष की बात है कि 'संदेश' पत्रिका का द्वितीय अंक आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। राजभाषा के उपयोग को बढ़ावा देने में यह पत्रिका निश्चित रूप से उपयोगी होगी। इस पत्रिका में अपनी रचनायें देने वाले धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं बिहार भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, पटना के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का आभारी हूँ जिनके सहयोग से पत्रिका का यह अंक प्रकाशित हो सका।

पत्रिका के उन्नयन के लिए आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे तथा हम आपके सुझावों के आकांक्षी है।

(पी० वी० राजशेखर)
निदेशक

सम्पादकीय

बिहार भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, पटना की हिन्दी गृह पत्रिका 'संदेश' के द्वितीय अंक का प्रकाशन निश्चित रूप से राजभाषा हिन्दी के उपयोग को बढ़ावा देने में सार्थक सिद्ध होगा, ऐसा मेरा विश्वास है। अपनी भाषा में भावों को व्यक्त करना मात्र आसान ही नहीं होता अपितु आंतरिक संतोष प्रदान करता है। मैकाले की शिक्षा पद्धति का सबसे भयावह पहलू यह है कि हम में से अनेकानेक लोग अंग्रेजी भाषा को अपनी राजभाषा/भाषा से ज्यादा महत्व देते हैं। यदि हमें वास्तव में प्रगति करना है तो ऐसी मानसिकता से बाहर निकलना होगा। कोई भी भाषा जानना या सीखना अच्छी बात है परन्तु अपनी राजभाषा/भाषा को तुलनात्मक रूप से कम महत्व देना उचित नहीं है।

इस पत्रिका में रचनाकारों के व्यक्त विचार राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास में सहायक होंगे। उम्मीद है कि भविष्य में भी पत्रिका के आगामी अंकों में रचनाकारों का सहयोग मिलता रहेगा तथा उनकी रचनाओं से लोग भी अपनी रचनायें देने के लिए प्रेरित होंगे।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के संबंध में पाठकों के विचार/सुझाव हमारे लिए अति महत्वपूर्ण होंगे तथा इन्हें आत्मसात करते हुए हम भविष्य में और उन्नत रूप में पत्रिका का प्रकाशन कर सकेंगे।

(राजेश कुमार)
अधिकारी सर्वेक्षक/हिन्दी अधिकारी

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	लेखक	पृष्ठ.सं.
1	वैज्ञानिक आध्यात्मवाद	रविकान्त कुमार, सर्वेक्षक	1
2	धन-दौलत की अहमियत	मो० सरवर इमाम, प्र०श्रे०लि०	3
3	नियति	राजेश कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक	5
4	झगड़ा-ए-बहू-सास	धीरज कुमार, प्र०श्रे०लि०	6
5	राहगीर	रामाश्रय दास, सहायक	7
6	दस्तक तुमसे है माँ	शीतल प्रसाद राय, सर्वेक्षण सहायक	7
7	जीवन में बड़ा महत्व है	शैलेन्द्र कुमार ठाकुर, सर्वेक्षण सहायक	8
8	बेचारा लल्लू	मो० शहजाद, सर्वेक्षक	9
9	मेरा पहला प्यार/ एक माँ का खत	मो० शहजाद, सर्वेक्षक	9
10	बोलने का हक नहीं, जो सोचते नहीं	राम केवल प्रसाद, सर्वेक्षक	10
11	मानव हो न निराश करो मन को	बालेश्वर राम, सर्वेक्षण सहायक	11
12	जीवन	राम नन्दन प्रसाद, प्र०श्रे०लि०	13
13	आओ सीखें	राम नन्दन प्रसाद, प्र०श्रे०लि०	13
14	पाटलीपुत्रा से पटना तक का सफर	बालेश्वर राम, सर्वेक्षण सहायक	14
15	मैं लड़की हूँ	अंजना रॉय, पुत्री श्री शीतल प्रसाद राय,	15
16	आठ चीजें तृप्त नहीं होती/ मुहब्बत	मो० शब्बर अली तैयब, प्र०श्रे०लि०	16
17	कुत्ते से सीखने योग्य बातें	मो० शब्बर अली तैयब, प्र०श्रे०लि०	16
18	भूकंप के साये में नेपाल और उत्तर भारत	सत्येन्द्र पारित, सर्वेक्षण सहायक	17
19	मेरा सर्वेक्षण का क्षेत्रकार्य	विपिन कुमार चौधरी, सर्वेक्षक	19
20	हिमालय की गोद में	बच्ची प्रसाद सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक	22
21	मैथिली लोक कहानियाँ	विपिन कुमार चौधरी, सर्वेक्षक	25
22	10 मंत्र खुशी के	आनन्द कुमार रॉय, सर्वेक्षण सहायक	29
23	स्वच्छता को समर्पित ये मलीन	बच्ची प्रसाद सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक	30
24	असफलता का भय	धर्मेन्द्र कुमार, स्टेनो ग्रेड-III	32
25	निंदा और द्वेष	धर्मेन्द्र कुमार, स्टेनो ग्रेड-III	32
26	हजरत मोहम्मद	अरूण कुमार विश्वास, प्र०श्रे०लि०	33
27	इब्राहीम	अरूण कुमार विश्वास, प्र०श्रे०लि०	33
28	अभिनव की सूझ-बूझ	अभिमन्यू सिंह, प्र०श्रे०लि०	34
29	सहयोगी	धीरज कुमार, प्र०श्रे०लि०	35
30	स्वदेशी जी.पी.एस.	सुनील कुमार शर्मा, सर्वेक्षक	36
31	मेरा प्यारा भारत	अरूण कुमार विश्वास, प्र०श्रे०लि०	38
32	महकते फूल	मो० शब्बर अली तैयब, प्र०श्रे०लि०	39

रविकान्त कुमार
सर्वेक्षक

वैज्ञानिक आध्यात्मवाद

यह विश्व-ब्रह्मांड चेतना और पदार्थ से मिलकर बना है। पदार्थ संबंधी ज्ञान एवं प्रयोग को भौतिक विज्ञान कहते हैं और चेतना संबंधी तत्वज्ञान एवं उत्कर्ष की विधि-व्यवस्था को आध्यात्म कहते है। दोनों के सम्मिश्रण से ही 'विज्ञान' शब्द की समग्रता और सार्थकता सिद्ध होती है।

विज्ञान के क्षेत्र में भारत विश्व में अपनी साख जमाने का प्रयत्न कर रहा है। हम संचार उपग्रहों का सफल प्रक्षेपण कर रहे है। आणविक शक्ति परियोजनाओं को सफलता से कार्यान्वित कर रहे हैं। साथ ही साथ कम्प्यूटर में विश्व-व्यापी नाम कमा रहे हैं। वर्तमान प्रधानमंत्री जी भी 'डिजिटल इंडिया' पर जोर दे रहे हैं। इससे स्पष्ट है कि आधुनिक विज्ञान एक नवीन शक्ति के रूप में पिछले कुछ सौ सालों से पूरे विश्व पर छा गया है।

वैज्ञानिक-आध्यात्म का नया युग आरम्भ होना ही चाहिए। यह आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। आध्यात्मिक प्रवृत्तियाँ अपनाने पर संसार को भाव-बंधन, माया-मिथ्या बताने जैसे दोषारोपण की आवश्यकता नहीं है न इधर-उधर भटकने तथा शिक्षा पर निर्वाह करने की। वर्तमान युग के आदर्श सन्तों में गाँधी-विनोबा की नीति सर्वोपरि रही है। सामान्य वेश-भूषा में रहते हुए ''सादा जीवन उच्च विचार'' की नीति को पाला जाए इतना ही पर्याप्त है। मन को लोभ, मोह, अहंकार की कुत्सित मानसिकताओं में न भटकने दिया जाए तो छोटे परिवार के उत्तरदायित्वों का निर्वाह कुछ भी कठिन नहीं पड़ता। परिजनों को स्वावलम्बी सुसंस्कारी बनाया जाये तो उनके लिए उत्तराधिकार में प्रचुर सम्पदा छोड़कर मरने की जरूरत नहीं है। आध्यात्म तत्व ज्ञान और विधि-विधान की शाश्वत रूपरेखा का स्वरूप स्पष्ट हो जाने पर उन भ्रान्तियों का निराकरण होना चाहिए जो आज इस क्षेत्र को तमसाच्छन्न किये हुए है।

विज्ञान की भाषा में दुनिया की प्रत्येक चीजें पदार्थ से बनी हुई है। इसका प्रमाण प्रयोग के माध्यम से होता है, परन्तु आध्यात्मिकता का विषयवस्तु चेतना पर आधारित रहता है। इसे अनुभव किया जा सकता है परन्तु प्रयोगशाला में प्रमाणित करना बहुत ही कठिन है। भौतिक इन्द्रियाँ सिर्फ ज्ञान को प्राप्त कर सकती हैं परन्तु अध्यात्मिक इन्द्रियाँ ज्ञान

प्राप्ति की सीमा से बढ़कर हैं जो सही ज्ञान को बाँट सकती है। विज्ञान के आधार पर हमारा ब्रह्मांड/शरीर प्राण चेतना (प्राण, अपाण, व्याण, समाण और उदाण) से मिलकर बनां है। इसका मतलब आध्यात्मिक विज्ञान के क्षेत्र में विज्ञान से ज्यादा गहराई में शोध के अवसर है। यदि विज्ञान के साथ आध्यात्म का सही समन्वय हो तो दोनों मिलकर विज्ञान को नया आयाम दे सकते हैं।

विज्ञान और आध्यात्म एक दूसरे के पूरक है। आज विज्ञान को आध्यात्म की आवश्यकता क्यों हो रही हैं? इसलिए कि विज्ञान में संवेदना नहीं होती जबकि आध्यात्म संवेदना पर आधारित है। यदि वैज्ञानिक शोध कार्य मानवीय संवेदना के आधार पर किए जाएँ तो विज्ञान विनाशकारी नहीं होगा, परमाणु बम नहीं बनेगें, प्रकृति का दोहन नहीं होगा बल्कि सकारात्मक दिशा में शोध कार्य संपन्न होगें। आज विज्ञान सक्षम है किसी भी कार्य को करने के लिए क्या सभी सुविधायें मनुष्य को शांति प्रदान करती है? यदि नहीं तो विज्ञान को संवेदना की जरूरत है। शायद इसलिए आज विज्ञान को आध्यात्मिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है ताकि वैज्ञानिक शोध कार्य मनुष्य के उत्थान के लिए हो, न कि विनाश के लिए। इसलिए विज्ञान और आध्यात्म को साथ चलने की आवश्यकता है, न कि विरोधी की तरह। विज्ञान और आध्यात्म एक बैलगाड़ी के दो पहिए के समान हैं, यदि दोनों पहिया एक साथ काम न करे तो बड़ी समस्या को जन्म दे सकती है। आध्यात्म को वैज्ञानिक कसौटी पर अगर नहीं कसा जाए तो आध्यात्म एक रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास बनकर रह जायेगा। इसलिए विज्ञान और आध्यात्म को परस्पर साथ चलने की आवश्यकता है। शायद इसलिए आज का युग वैज्ञानिक कहना पूर्ण नही होगा बल्कि इसे वैज्ञानिक आध्यात्मवाद होना होगा।

ओ देस से आने वाले बता!
क्या अब भी वहाँ के बाग़ों में मस्ताना हवाएँ आती हैं?
क्या अब भी वहाँ के परबत पर घनघोर घटाएँ छाती हैं?
क्या अब भी वहाँ की बरखाएं वैसे ही दिलों को भाती हैं?
ओ देस से आने वाले बता!

-अख्तर शीरानी

मो० सरवर इमाम
प्रवर श्रेणी लिपिक

धन-दौलत की अहमियत

वर्तमान परिवेश में हम भौतिक सुख पाने के लिए रूपया के पीछे भाग रहे है। हम किसी भी तरीके से चाहे उचित हो या अनुचित, बस दौलत पाने की कोशिश में लगे हैं। वर्तमान में अधिकांशतः हर परिवार के सदस्य कमाने में लगे हुए हैं। दम्पत्ति अपने बच्चे को नौकरानी/शिशु देखभाल केन्द्र के हवाले छोड़कर नौकरी कर रहे हैं, क्योंकि उन्हें हर भौतिक सुख चाहिए। उन्हें एल.सी.डी., टी.वी., फ्रिज, ए.सी., कूलर, हर सदस्य के लिए अपनी-अपनी गाड़ी, बंगला, मोबाईल, जेवरात आदि चाहिए। इनमें कुछ चीज तो जरूरत की है लेकिन कुछ चीज न रहने से हमारे जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ने वाला है, फिर भी इसकी चाह अधिक रखे हुए हैं। अतः इन सब भौतिक सुख पाने हेतु धन-दौलत के लिए दिन-रात एक किए हुए हैं। यहाँ तक कि हमें अपने परिवार से बातचीत करने का भी समय नहीं है। हम अपने बच्चे को केवल रात में ही देख पाते हैं। वह दिन भर कैसे रहता है, क्या करता है, इसकी जानकारी रखने का भी समय हमारे पास नहीं बचा है। लोग अपने बच्चों को नौकरानी, शिशु देखभाल केन्द्र के हवाले छोड़ अपनी जिम्मेदारी को पूर्ण समझ रहे हैं जो कि सही नहीं है।

आज बच्चे को परिवार खासकर माता-पिता का साथ नहीं मिलने के कारण उनमें जिद्दीपन, चिड़चिड़ापन, गुस्सा जैसी प्रवृत्ति बढ़ गई हैं। वे आज अपने माता-पिता की बात मानने को तैयार नहीं है। उन्हें जो चाहिए वे हासिल कर लेते हैं क्योंकि माता-पिता के पास तो समय नहीं है, इसलिए वे इनके जायज-नाजायज सारी बात मानने लगे हैं जिससे बच्चों में जिद्दीपन आ गया है। बच्चे को माता-पिता का प्यार नहीं मिलने के कारण उनमें हिंसात्मक गतिविधियाँ की भी वृद्धि हो गई है। अतः हम धन-दौलत के चक्कर में अपने बच्चों की जिन्दगी बर्बाद कर रहे हैं। पहले के लोग जीने के लिए कमाते थे (धन एकत्रित करते थे) लेकिन आज हम कमाने के लिए जीते हैं।

अभी हाल ही में दिनांक 25 एवं 26 अप्रैल, 2015 को भूकम्प के तेज झटके आए। भूकम्प का केन्द्र तो नेपाल में था परन्तु इसका असर बिहार, यू.पी., पश्चिम बंगाल और झारखण्ड पर भी पड़ा। नेपाल का दो शहर तो पूरी तरह बर्बाद हो गया, बिहार राज्य

पर भी इसका असर पड़ा है। न्यूज चैनल पर खबर कि कैसे लोग घरों को छोड़कर अपने परिवार के साथ खुले मैदान में दो-दो दिनों तक गुजारा। इसके बाद भी कई झटके महसूस किए गए और सारे लोगों में डर की झलक साफ देखी गई।

हमने भी अपने क्षेत्र में देखा कि भूकम्प के झटके महसूस करते ही लोग अपने बच्चे को लेकर जिस हाल में थे उसी हाल में खुले क्षेत्र में घर खुला छोड़कर भाग खड़े हुए। हमें उस समय तो न बंगला की फिक्र थी, न धन-दौलत की और न ही घर में रखे कीमती चीजों की फिक्र थी, बस एक ही फिक्र था कि हम कैसे अपना और अपने परिवार को बचाएँ। कितने लोग तो धन-दौलत छोड़ इस दुनिया से चले गए, कितने लोगों को धन-दौलत ही बर्बाद हो गया है और हम कुछ न कर सके।

अतः कहने का तात्पर्य यह है कि जब विपदा आती है तो हम धन-दौलत छोड़कर जान बचाने के लिए भाग खड़े होते हैं तो फिर हम इस दौलत को पाने के लिए इतनी मेहनत क्यों कर रहे हैं? जिसके कारण हम अपने परिवार को भी समय नहीं दे पा रहे हैं। जरा हमें इस बारे में सोचना चाहिए। जो धन दौलत प्राकृतिक आपदा में साथ नहीं देता तो उसे हासिल करने के लिए अपनी पूरी जिन्दगी क्यों लगा दें?

हमें चाहिए कि जरूरत के हिसाब से ही धन-दौलत कमायें (रखें) और समय बचाकर अपने परिवार को दें, अपने आस-पास के पर्यावरण की देखभाल करें एवं समाज पर भी ध्यान दें । परिवार ही हमारा असली धन-दौलत है इन्हें बिखरने न दें, इन्हें अपने प्यार से सींचें यही दौलत आपको खुशी प्रदान करेगी।

.

सूक्तियाँ

☆ लोगों से अच्छा बर्ताव करने के लिए हमें कोई क़ीमत चुकानी नहीं पड़ती। लेकिन ऐसा बर्ताव हमें बड़ा बनाता है ❇

❇ बलिदान, उपकार और प्रेम के मिश्रण को की व्यहार कहा जाता है ❇

❇ मनुष्य का चाल-चलन इस बात से भी मालूम हो सकता है कि वह किस बात पर खुशी व्यक्त करता है किस बात से क्रोधित ❇

❇ जिसको माँ-बाप ने अच्छे व्यवहार नहीं सिखाये उसे ज़माना (समय) सिखा देता है ❇

❇ बहुत अधिक व्यवहारिक न बने अन्यथा आपको धोखा हो सकता है ❇

दोस्ती

❇ दोस्ती ही एक ऐसा फूल है जिस में कांटे नहीं होते ❇

❇ आर्थिक दृष्टि से बेहतर लोगों के साथ दोस्ती न करो ❇

❇ पुरानी दोस्ती सब से बेहतरीन आईना होती है ❇

❇ दोस्त के दुश्मन से एवं दुश्मन के दोस्त से ❇

कृपा करके भूल जाने वाले ही दोस्ती के लायक है ❇

राजेश कुमार
अधिकारी सर्वेक्षक

नियति

मैं वो माली हूँ जिसने कि पतझड़ में,
खाक सर पे रमा ली चमन के लिए।
आज आये हैं जब ये बहारों के दिन
हम तरसने लगे एक सुमन के लिए।

उम्र भर मैंने समुद्र-मंथन किया,
जो किनारे रहे वारूणि पा गए।
मुझको विष मिल गया आचमन के लिए
मैं वो माली हूँ जिसने कि पतझड़ में,
खाक सर पे रमा ली चमन के लिए।

मंदिरों में भटकता रहा मैं सदा,
कोई मूरत नहीं सर झुकाए जहाँ।
एक प्रतिमा अचानक नजर आ गयी,
मन विकल हो रहा है नमन के लिए।
मैं वो माली हूँ जिसने कि पतझड़ में,
खाक सर पे रमा ली चमन के लिए।

झगड़ा-ए-बहू-सास

घर में घुसते ही उसे अहसास हुआ,
आज फिर झगड़ा-ए-बहू-सास हुआ।

कभी आम हुआ तो कभी ख़ास हुआ,
लेकिन (शादी के बाद) तकरीबन हर मास हुआ।

आज भी दोनों खड़ी एक दूसरे के विरूद्ध हैं
और दोनों में जारी एक शीत युद्ध है।

सास कहे कि बहु करती नहीं मेरा मान है,
बहू कहे कि सास करती मेरा अपमान है।

उन दोनों के मान-अपमान के बीच,
बेचारा पति परेशान है।

क्यों नहीं मिलते इस दुनियाँ में दोनों के मन हैं?
क्यों समाज में एक औरत ही औरत की दुश्मन है?

आज हमारे समाज में यह घर-घर की कहानी है,
कहीं सास तो कहीं बहु ने कमान तानी है।

क्यों नहीं बनता दुनिया में ऐसा फेविकोल?
जो सास-बहु के दिलों को ऐसे जोड़ जाए,
कि अच्छे से अच्छा न तोड़ पाए।

❀❀❀

धीरज कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

राहगीर

रहो आप सब सदा खुश,
मैं रोऊँ आपके बदले।

आपकी हँसी चुराकर ले जाऊँ,
ये तबीयत नहीं, पर रोऊँ आपके बदले।

आपके पैरों के निशां मैं चूमूँ,
सिर्फ छू कर चल दूँ, ये तबीयत नहीं।

पर काँटों को चूमूँ आपके बदले,
आपके यादों में जिऊँ, मर जाऊँ ये तबीयत नहीं।

पर अपनी निशां मिटा दूँ आपके बदले,
तूफाँ से मैं लड़ूँ, समन्दर में उतर आऊँ।

तुझे आगे कर दूँ, ये तबीयत नहीं,
पर साहिल छोड़ दूँ, आपके बदले।

लिखूँ तो और क्या लिखूँ ?
मैं, आपके प्यार के बदले।

रामाश्रय दास, सहायक

दस्तक तुमसे है माँ

हर मोड़ की दस्तक तुमसे है माँ
हर शाम का ढलना तुमसे है।
अब तो मन का बेबस होकर,
दिन-रात मचलना तुमसे है।
इस बेबस काली रातों में,
धड़कन का धड़कना तुमसे है।
हर सपनों में मेरा होकर
हर सपना जैसे तुमसे है।
जब धूप अंधेरी होती है।
और छाँव सुहानी होती है।
ऐसे में तेरे आँचल के
हर गोटे प्यारे लगते हैं।

जब खेतों से खुशबू सरसों की
छू तलक लहराती है।
ऐसे लगता है जैसे वो माँ,
तुझको छूकर बलखाती है।
जब ओस की बूँदें पत्तों पर,
गिरती है गिर कर बिखरती है।
जब किरणें उस पर पड़ती है।
उस मोती का चमकना तुमसे है।
हर मोड़ की ढ़लना तुमसे है माँ।

शीतल प्रसाद राय, सर्वेक्षण सहायक

जीवन में बड़ा महत्व है

बरसात में छाते का, बड़ा महत्व है,
जाड़े में कोट का, यात्रा में रेल का,
फल में बेदाना का, शादी में शहनाई का
मार में चोट का, चुनाव में वोट का,

समाचार में आकाशवाणी और दूरदर्शन का बड़ा महत्व है।

जूता में बाटा का, लोहा में टाटा का
तौल में काँटा का बड़ा महत्व है।

आँगन में नारी का,
दरवाजे पर दरबारी का बड़ा महत्व है।
अस्पताल में रिपोर्ट का,
कोर्ट में गवाह का बड़ा महत्व है।

शैलेन्द्र कुमार ठाकुर
सर्वेक्षण सहायक

दोस्ती

- दोस्ती ही एक ऐसा फूल है जिस में कांटे नहीं होते।
- पुरानी दोस्ती सब से बेहतरीन आईना होती है।
- आर्थिक दृष्टि से बेहतर लोगों के साथ दोस्ती न करो।
- दोस्त के दुश्मन से एवं दुश्मन के दोस्त से कदापि दोस्ती नहीं करनी चाहिए।
- दोस्ती को आसानी से खोया जा सकता है, पाया नहीं जा सकता।
- कृपा करके भूल जाने वाले ही दोस्ती के लायक है।

मो० शहजाद
सर्वेक्षक

बेचारा लल्लू

कहे बंदरिया लल्लु जी !
मेरे बन्दर कल्लु जी !
साड़ी एक मुझे ला दो ।
सैर कहीं की करवा दो ।
बंदर जी भूले थे चार्ट,
ऑफिस में खाई थी डाँट।
बोले सुनो बंदरिया जी !
जाना नहीं बजरिया जी !
कितनी ये मँहगाई है,
पास न मेरे पाई है।
खर्चा न बढ़ाओ तुम !
दाल रोटी पकाओ तुम !
हुई बंदरिया फिर नाराज,
बोली सुनो बहानेबाज !
खाना नहीं बनेगा अब,
झगड़ा खूब तनेगा अब।
किसे सुनाए अपना हाल?
भूखे बैठे लल्लु लाल।

मेरा पहला प्यार

माँ धरती पर आने के बाद सबसे पहले आपने मुझे प्यार किया, जब मैंने गलती की तो आपने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे समझाया। आपने मुझे चलना सिखाया, मेरे लिए दिशाऐं तय की, जब भी मुझे आपकी जरूरत हुई, आप मेरे पास थीं। जब भी मैं रोया, आपने मेरे आँसू पोंछे, आज मैं आपको रोते नहीं देख सकता, भले ही मैं आज बड़ा हो गया हूँ, लेकिन मैं आपका बेटा हूँ। आज मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि- ‘‘मैं आपसे बहुत प्यार करता हूँ।’’

एक माँ का खत

बेटा, एक दिन मैं बूढ़ी हो जाऊँगी, क्या तुम मेरी देखभाल करोगे? जैसे बचपन में मैंने तुम्हारी की थी। यक़ीनन तुम काम में बहुत व्यस्त होगे, पर क्या मेरे लिए वक्त निकालोगे? मेरी बोरिंग कहानी सुनोगे? जैसे मैं तुम्हारी टेडी बीयर की कहानियाँ सुना करती थी।

जब मैं बीमार होकर बिस्तर पर पड़ जाऊँगी, तो तुम मुझे घर से बाहर तो नहीं निकालोगे? अगर गलती से मैं बिस्तर गीला कर दूँ तो तुम नाराज तो नहीं होगे? क्या अंतिम क्षण में तुम मेरा हाथ थामोगे? ताकि मैं आसानी से मौत का सामना कर सकूँ। मैं भगवान के पास जाकर उनसे कहूँगी कि वह तुम्हें ढेर सारा आशीष दें।

उन्हें बोलने का हक नहीं, जो सोचते नहीं

- राम केवल प्रसाद, सर्वेक्षक

- मैं अपने अतीत में लौट नहीं सकता क्योंकि उस समय मैं अलग इन्सान था, अब मैं बिल्कुल अलग हूँ।
- आखिर मैं इस दुनियाँ में कौन हूँ? यह सब के लिए अबूझ पहेली है।
- जीवन के सबसे बड़ी सच्चाई यह है कि जो काम अनमोल होते हैं, उन्हें हम दूसरों के लिए करना पसंद करते हैं, खुद के लिए नहीं।
- यदि आप सोचते नहीं हैं तो आपको बोलने का अधिकार नहीं है।
- सुबह उठने के वक्त मुझे मालूम था कि मैं कौन हूँ? इसके बाद पूरे दिन मैं कई बार बदलते रहता हूँ, ये सब के साथ होता है।
- हर बात मजाकिया होती है, यदि आपको उस पर हँसी आये तो.....
- प्यार करने से ज्यादा बेहतर है दूसरों से डर कर रहना।
- हम समय-समय पर अच्छी सलाह देते रहते हैं लेकिन उस पर अमल कम ही करते हैं।
- हर चीज को समझिये, परन्तु किसी चीज पर रोने की जरूरत नहीं है।
- यदि आपने किसी एक व्यक्ति की जिंदगी बचाई है तो आप समझ जाइए कि आप में पूरी दुनिया को बचाने का साहस है।
- लोग जिन चीजों को जानने के बारे में ज्यादा उत्सुकता दिखाते हैं, उन चीजों से उनका कोई लेना-देना ही नहीं होता है।
- हमेशा सच बोलिए, बोलने से पहले सोचिए जरूर।
- हर बात में कोई न कोई सबक़ छिपा होता है, जरूरत है तो सिर्फ उसे समझने की।
- जब हर व्यक्ति अपने काम से काम रखने लग जाएगा तो दुनिया ज्यादा तेजी से घूमने लगेगी।
- सच्चाई या हक़ीक़त से लड़ने के लिए सिर्फ एक हथियार जरूरी है, वह है कल्पना करना।
- जिंदगी क्या है, यह एक हसीन सपने की तरह है।
- मुझ पर विश्वास करोगे, मैं आप पर विश्वास कर सकूँगा।
- आप किस रास्ते जाना चाहते हैं, यह इस बात से तय किया जा सकता है कि आप कहाँ जाना चाहते हैं?

बालेश्वर राम
सर्वेक्षण सहायक

मानव हो न निराश करो मन को

संसार में वीरों की तरह कर्म करने वाले मनुष्य को सच्चा मानव कहा जाता है, जो विषम परिस्थिति में भी कर्म करने से मुँह नहीं मोड़ता वही सच्चा मानव कहलाने का अधिकारी है। प्रायः देखने में आता है कि असफलता मिलने पर मनुष्य निराश हो जाता है।

ईश्वर ने मनुष्य को सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी बनाया है। उन्हें सोचने-समझने की अद्भूत बुद्धि दी है। कार्य करने के लिए हाथ-पैर दिए हैं तथा दी है असीम शक्ति। ईश्वर ने इस दुनिया में मानव को विशेष उद्देश्य के लिए भेजा है। मानव को अपने कर्त्तव्य एवं लक्ष्य को पहचानना चाहिए। कभी-कभी कर्म करने पर भी मानव को वांछित फल की प्राप्ति नहीं होती है। ऐसे में निराश और उदास होकर बैठ जाने से काम नहीं चलेगा।

मानव जीवन का अर्थ मात्र खाना-पीना, संतान उत्पन्न करना नहीं है, ये काम तो पशु-पक्षी और अन्य जीव भी करते हैं। यदि जीवन का उद्देश्य यही होता तो फिर मानव और पशु में अंतर ही क्या रह जाता? सच्चा मानव वही है जो सोच समझकर, योजना बनाकर परिश्रम करके सफलता के उच्चतर शिखर पर पहुँचता है। सच पूछा जाय निराशा जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप है। हार-जीत, सफलता-असफलता तो जीवन का अंग है। इस सृष्टि में मानव ईश्वर का अद्भूत सृजन है। हिम्मत हार कर बैठ जाना, अपने दायित्व का निर्वाह न करना, कर्म को त्याग देना कदापि उचित नहीं है। हिम्मत हार कर बैठ जाना मानव का काम नहीं है।

मानव जीवन अनिश्चित है। समय का मूल्य समझना है। अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करते हुए उत्साहित जीवन व्यतीत करना चाहिए। मार्ग स्वंय खोजना है। मन में निराशा का घुन नहीं लगने देना चाहिए। नहीं तो निराशा रूपी घुन मनुष्य को भीतर से खोखला कर देती है। निराश व्यक्ति कुछ भी नहीं कर पाता है। मनुष्य को विपरीत एवं विषम परिस्थितियों में आगे बढ़ते जाना है। भगवान या अल्लाह उसी की मदद करता है जो अपनी सहायता खुद करता है।

यदि मनुष्य मन लगाकर मेहनत करे तो इस दुनिया में कुछ भी असम्भव नहीं। नेपोलियन बोनापार्ट ने कहा था- ''असम्भव शब्द मूर्खों के शब्द कोश में है।'' भगवान श्री कृष्ण ने भी गीता में कहा है- ''कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर रे इंसान।'' निराशा छोड़कर कर्म पथ पर आगे बढ़कर ही मानव अपने जीवन को उज्ज्वल बना सकता है। और देश और समाज में गौरव प्राप्त कर सकता है। हमारे हिन्दुस्तान के महान वैज्ञानिक डा० ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के जीवन से हम सीख सकते हैं, जिन्होंने अभाव में भी कर्म पथ पर बढ़ते हुए देश के 11 वें राष्ट्रपति बने, वे 'मिसाइल मैन' के नाम से भी जाने जाते हैं। देश के महान वैज्ञानिक और महान सपूत का निधन दिनांक 27 जुलाई 2015 को हो गया। देशवासी उनके देन को भूल नहीं सकते, हम भारतीयों को उनके जीवन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। हिन्दुस्तान हमेशा उनकी देशभक्ति और महान देन को याद करता रहेगा।

❋❋❋

बिहार प्रार्थना

मेरी रफतार पर सूरज की किरण नाज करे
ऐसी परवाज दे मालिक की गगन नाज करे
वह नजर दे कि करूँ कद्र हर एक मजबह की
वह मोहब्बत दे मुझे अम्ने अमन नाज करे
मेरी खुशबू से महक जाये यह दुनिया मालिक,
मुझ को वह फूल बना सारा चमन नाज करे
इल्म कुछ ऐसा दे मैं काम सबों के आऊँ
हौसला ऐसा ही दे गंग व जमन नाज करे
आधे रास्ते पर न रूक जाये मुसाफिर के कदम
शौक मंजिल का हो इतना कि थकन नाज करे
दीप से दीप जलाएं कि चमक उठे बिहार
ऐसी खूबी दे ऐ मालिक की गगन नाज करे

-एम आर चिश्ती

राम नंदन प्रसाद, प्रवर श्रेणी लिपिक

जीवन

जिन्दगी जीने का नाम है जीवन । खुशियों का पैगाम है जीवन।
अंधेरे में प्रकाश है जीवन । त्यौहारों में अवकाश है जीवन।
मिठाईयों की मिठास है जीवन । सौगातों की आस है जीवन।
फूलों की सुगंध है जीवन । होली की हुड़दंग है जीवन।
बच्चों की मुस्कुराहट है जीवन । सर्दी की गरमाहट है जीवन।
चिड़ियों की चहचाहट है जीवन । रिश्तों की सुगबुगाहट है जीवन।
जीवन के हैं अनेक रूप । यही बनाते है इस अनूप।
इस जीवन को तुम बना लो अपना, ताकि अधूरा न रह जाए कोई सपना।

आओ सीखें

❋	महात्मा गाँधी से	:	सदैव अहिंसा की राह पर चलना।
❋	चन्द्रशेखर आजाद से	:	कभी गुलामी न सहना।
❋	स्वामी विवेकानन्द से	:	अपने देश का गौरव बढ़ाना।
❋	सुभाष चन्द्र बोस से	:	कभी न घबराना।
❋	डॉ० राजेन्द्र प्रसाद से	:	हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करना।
❋	वीर सैनिकों से	:	देश के लिए मर मिटना।
❋	आचार्य से	:	सभी को एकता एवं संस्कार का पाठ पढ़ना।

पाटलीपुत्र से पटना तक का सफर

बालेश्वर राम
सर्वेक्षण सहायक

पटना नगर गंगा नदी के तट पर स्थित है, जो बिहार की राजधानी है। पाटलिपुत्र से पटना तक का सफर ढ़ाई हजार वर्ष पुराना है। कभी यह नगर पूरे भारत वर्ष की राजधानी थी, तब इसे पाटलिपुत्र के नाम से जानते थे। ईसा पूर्व छठी सदी में गौतम बुद्ध के कालखण्ड में पाटलिपुत्र नगर का निर्माण शुरू हुआ। प्राचीन काल में यह एक छोटा सा गाँव था। उसे कुसुमपुर, अजीमाबाद, पाटलि, पाटलिग्राम, पादलीपुरा जैसे नामों से जाना जाता था। नंद, मौर्य, शुंग और गुप्त वंश के सम्राटों के विशाल भारतीय साम्राज्य की राजधानी के रूप में नगरीय स्वरूप लेता गया। मौर्य काल में पाटलीपुत्र सुंदर नगर बन चुका था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में नगर की सुंदरता का विस्तार से वर्णन मिलता है।

चाणक्य के कूटनीतिक कौशल और चन्द्रगुप्त मौर्य के शौर्य ने इस नगर को दुनिया के नक्शे में स्थापित किया। सम्राट अशोक, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य और समुद्रगुप्त के पराक्रमी शासन में पाटलिपुत्र फला-फूला। आर्यभट्ट के खगोलीय ज्ञान ने संसार को रोशन किया। कालान्तर में गुरू गोविन्द सिंह की वीर गाथा, महात्मा गाँधी के चम्पारण सत्याग्रह, देश की आजादी में सात छात्रों की कुर्बानी, जननायक जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन जैसी इतिहास रचती घटनाओं का साक्षी बना यह नगर। वक्त के थपेड़ों से ढहता बनता पाटलीपुत्र शेरशाह के समय पटना (अज़ीमाबाद) नाम से इतिहास के पन्नों पर दर्ज हुआ। शेरशाह के समय से यह नगर फिर से प्रगति की राह पर चल पड़ा। अब तो देश के प्रगतिशील नगरों मे सबसे आगे निकलने को आतुर है पटना नगर। पटना सिटी का गुरूद्वारा, पटन देवी, गोलघर, म्युजियम, तारामण्डल, महात्मा बुद्ध का स्तूप और रेलवे जंक्शन स्थित हनुमान मंदिर, ये सब इस नगर के सांस्कृतिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहर हैं।

अब तो यहाँ नित नई-नई इमारतें और ओवर ब्रिज देखते ही बनता है। नगर की सुन्दरता दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। हम इस नगर को आधुनिकता से सराबोर देख रहे हैं, लेकिन अपनी परम्परा और हमारे प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को अपने में समेटे हुए। मैं बचपन से ही अपने गृह नगर गुमला से इस नगर के बारे में सोचा करता था। किताबों में चित्रित गोलघर का ध्यान बरबस आता था। अब तो सर्वे ऑफ इण्डिया में कार्य करते हुए इस नगर को क़रीब से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे इस नगर से काफी लगाव है। यह नगर महान विभूतियों, महात्माओं और देवताओं की भी प्राचीन समय में कर्मभूमि रही है। ईश्वर से प्रार्थना है कि मैं सदैव इस ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक नगर से जुड़ा रहूँ।

मैं लड़की हूँ

अंजना रॉय
पुत्री श्री शीतल प्रसाद राय,
सर्वेक्षण सहायक

मेरा जन्म लड़की में होना कोई इत्तफाक़ नहीं था, बल्कि यह तो भगवान की सोची समझी खूबसूरत सी योजना थी। मैं लड़की ही जन्म लूँगी, यह तो पृथ्वी के निर्माण से पहले ही तय हो चुका था। मैं कब, कहाँ, किसके घर और किस साल में जन्म लूँगी यह सब पहले ही तय था।

मैं तो हर पल, हर दिन किसी न किसी परिवार में जन्म लेती हूँ, उस परिवार के सदस्य मेरा इस दुनिया में आने का इंतजार करते हैं। जब मेरा जन्म हुआ होगा तो लोगों ने मेरी माँ को कहा होगा कि लड़की तो क़िस्मत वालों के घर जन्म लेती है। मैं अपने घर की ख़ुशी की वजह बनी रहूँगी। जब मैं बड़ी होने लगी तो कई सवाल जन्म लिये होंगे कि मैं लड़की क्यों हूँ- लड़का क्यों नही? तब जाके मेरी समझ में आया कि हम लड़कियाँ तो अनोखी और खास होती है, पापा के दिल के पास होती है। मैं, सिर्फ मैं हूँ मेरे जैसा दूसरा कोई नहीं।

हम लड़कियों को हमेशा याद रखना चाहिए कि हमें तो भगवान ने बनाया अपने तरीके से। इस संसार में केवल औरत ही है जो की एक नया जीवन लाती है तो फिर भी हम खुश क्यों नहीं होते? हमें तो गर्व होना चाहिए कि हम लड़की हैं। बेकार की सोच में अपना वक्त क्यों बरबाद करते हैं? लड़की होना कोई गुनाह नहीं बल्कि भगवान का खूबसूरत सा तोहफा है। लड़की होना गर्व की बात है। लड़कियों को जीने दो !

❖❖❖

जरा हँसिए.....

- रोगी- ''डाक्टर साहब! मेरा ईलाज कीजिए, मुझे एक के दो-दो नजर आते हैं।''
  डाक्टर- '' ओहो! तो क्या तुम चारों को एक ही बीमारी है?''
- एक पठान बिना छीले केला खा रहा था, मुन्ना- ''इसको छील तो लो।
  पठान- '' छीलने की क्या जरूरत है, हमें मालूम है इसमें केला है।''
- सर्किट- भाई आप जुआ मत खेला करो, जुए में अगर आदमी एक दिन जीतता है तो दूसरे दिन हारता भी है।
  मुन्ना- '' तो फिर ठीक है, आज से मैं एक दिन छोड़कर जुआ खेला करूँगा।
- मुन्ना- ''क्या तुम बिना खाना खाए जीवित रह सकते हो,
  सर्किट- ''हाँ, मैं रह सकता हूँ।'' मुन्ना- ''वह कैसे?''
  सर्किट- ''नाश्ता कर के।''
- मुन्ना- ''क्या बात है, सर्किट आजकल तू रोज नए-नए जूते पहन कर आता है। कहीं जूतों की दुकान तो नहीं खोल ली।''
  सर्किट- ''नहीं जी। वो क्या है न कि मेरे घर के सामने नया मन्दिर बन गया है।''

आठ चीजें तृप्त नहीं होती

मो० शब्बर अली तैयब
प्रवर श्रेणी लिपिक

- आँख देखने से
- मृदा वर्षा से
- मनुष्य प्रेमी से
- ज्ञानी ज्ञान से
- याचक दान से
- लोभी धन से
- सागर पानी से
- आग लकड़ियों से

मुहब्बत

- मुहब्बत वतन से हो तो ईमान का हिस्सा बन जाती है।
- मुहब्बत खुदा से हो तो बन्दगी बन जाती है।
- मुहब्बत माँ-बाप से हो तो ममता का रूप धर लेती है।
- मुहब्बत दौलत से हो तो रोग बन जाती है।
- मुहब्बत दोस्त से हो तो राहत (कल्याण) बन जाती है।
- मुहब्बत गुरू से हो तो प्रकाश बन जाती है।
- मुहब्बत बेवफा हो तो संकट बन जाती है।

कुत्ते से सीखने योग्य बातें

- कुत्ता भूखा रहता है, जो योगी के लक्षण हैं।
- इसका कोई ठिकाना नहीं होता, जो सन्यासी के लक्षण है।
- यह रात को जागता है, जो साधक के लक्षण हैं।
- जब मरता है तो कोई सम्पत्ति नहीं छोड़ता, जो कि उसके बाद विवाद का कारण बने।
- यह अपने मालिक का वफादार होता है, जो एक स्वामिभक्त के लक्षण है।

सत्येन्द्र पारित
पटल चित्रक ग्रेड-।।

भूकंप के साये में नेपाल और उत्तर भारत

अप्रैल को आए भूकंप की तीव्रता 7.9 थी। इसे अति तीव्र श्रेणी का भूकंप घोषित किया गया है। तबाही का मंजर ज्यादा भयानक हो गया क्योंकि इसकी गहराई सतह से मात्र 2 किमी पर बताई गई है। प्रारंभ में इसे सतह से 18 किमी नीचे बताया गया था। बिहार में भी इस भूकंप के तेज झटके महसूस किये गए। एक अनुमान के अनुसार पिछले पाँच दशक में आया यह सबसे तेज भूकंप है। इसके नुकसान के आकलन अभी किए जा रहे हैं। नेपाल में भारी तबाही की आशंका जताई गई है। यहाँ 1832 में बना ऐतिहासिक धरहरा टावर धराशायी हो गया। इस वजह से हिमालय में कई जगह भू-स्खलन, एक्लाँच और चट्टान खिसकने की संभावनाए पैदा हो गई है। भारत में बिहार के अलावा उत्तर प्रदेश, दिल्ली एन.सी.आर., सिक्किम, गुजरात और राजस्थान में भी भूकंप के झटके महसूस किये गये। इस भूकंप ने एक बार फिर मानव निर्मित पूर्व चेतावनी व्यवस्था और आपदा प्रबंधन पर बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं। तमाम प्रयासों के बाद भी वैज्ञानिक ऐसी किसी व्यवस्था को बना पाने में अब तक नाकाम रहे है। जिससे भूकंप जैसी आपदाओं का पूर्वानुमान लगाया जा सकता हो। भूकंप ऐसी प्राकृतिक घटना है जिसकी वजह से एक साथ बड़ा नुक़सान होता है। इससे पहले गुजरात और महाराष्ट्र में आए भूकंपों की वजह से भारत में काफी जानमाल का नुक़सान हो चुका है।

भूकंप को समझने के लिए उससे संबंधित शब्दावली समझना जरूरी है, जिसका प्रयोग इस तरह की घटनाओं की रिपोर्टिंग के दौरान किया जात है। शब्दावली का प्रयोग भूविज्ञान में आमतौर पर किया जाता है।

1. **भूकंप मूल या फोकस**- पृथ्वी की गहराई मे जिस स्थान पर भूकंप की शुरूआत होती है, उसे भूकंप का उत्पत्ति केन्द्र या मूल कहा जाता है। यह जितनी ज्यादा गहराई में होती है, वहाँ पर भूकंप का प्रभाव उतना ही कम होता चला जाता है। भूकंप मूल के आधार पर भूकंपों को तीन वर्गों में बांटा गया है।

   अ. **सामान्य भूकंपः**- ऐसे भूकंपों का भूकंप मूल धरातल से 50 किमी की गहराई में स्थित होता है।

   ब. **मध्यम भूकंपः**- ऐसे भूकंपों के उत्पत्ति केन्द्र की गहराई 50 से 250 किलोमीटर तक होती है।

स. गहरे भूकंपः- इन्हें पातालीय भूकंप भी कहा जाता है। ऐसे भूकंपों का उत्पत्ति केन्द्र 250 किमी से 700 किमी तक होता है। ऐसे भूकंपों का अध्ययन अभी तक नहीं के बराबर हुआ है।

2. **भूकंप अधिकेन्द्र या एपीसेंटरः**- भूकंप मूल के ठीक उपर स्थित स्थान, जहाँ सबसे पहले भूकंपीय तरंगों का पता चलता है, अधिकेन्द्र कहलाता है। भूकंप से प्रभावित क्षेत्रों में अधिकेन्द्र ही वह जगह होती है जो भूकंप से सबसे पहले और सबसे ज्यादा प्रभावित होती है।

3. **सिस्मोग्राफ**- जिस यंत्र की सहायता से भूकंपीय लहरों का अंकन किया जाता है, उसे सिस्मोग्राफ कहा जाता है। सिस्मोग्राफ एक अत्यन्त संवेदनशील यंत्र होता है, जो पृथ्वी की सतह पर होने वाली सूक्ष्म हलचल का एक ग्राफ तैयार करता है। इस हलचल को मापने के लिए पैमाने का उपयोग किया जाता है। वर्तमान में भूकंपों की तीव्रता को मापन के लिए दो पैमाने का प्रयोग किया जाता है।

4. दर असल भूकंप से एक लहर उत्पन्न होती है, इन लहरों की गति सबसे ज्यादा होती है। ये लहरें ध्वरि तरंगो की तरह एक सीधी रेखा में चलती हैं। इन लहरों के प्रभाव में पदार्थ के कण गति की दिशा में सफर करते हैं। इन लहरों को सिस्मोलॉजी में अंग्रेजी के पी अक्षर द्वारा दर्शाया जाता है। ये लहरें ठोस हिस्सों में सबसे तेज गति में प्रभावित होती है।

❖❖❖

बेकार है.....

- ❖ बेकार है वह देश जहाँ कानून नाम की कोई चीज न हो।
- ❖ बेकार है वह आँख जिसमें आंसू न हो।
- ❖ बेकार है वह व्यक्ति जिसमें अच्छे व्यवहार न हो।
- ❖ बेकार है वह दिल जिस में दर्द न हो।
- ❖ बेकार है वह धन जो किसी अच्छे काम के लिए प्रयोग न की जाय।
- ❖ बेकार है वह हाथ जिन से काम न लिया जाय।
- ❖ बेकार है वह मस्तिष्क जिसमें बुद्धि न हो।
- ❖ बेकार है वह ज्ञान जिसका कोई फायदा न हो।
- ❖ बेकार है वह काम जिस में मेहनत न हो।

निदेशक,बिहार भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र,पटना झण्डोत्तोलन करते हुए

स्वच्छता अभियान को सफल बनाते अधिकारी/कर्मचारीण

निदेशक द्वारा वार्षिक खेल-कूद वर्ष 2015 का उदघाटन

हिन्दी दिवस पर वार्षिक पत्रिका 'संदेश' के विमोचन की झलकियां

विपिन कुमार चौधरी
सर्वेक्षक

मेरा सर्वेक्षण का क्षेत्रकार्य

वर्ष 2008-09 के दौरान हमारा मुख्य शिविर जितावारपुर (समस्तीपुर) में लगा था। कई जगह पर सर्वेक्षण कार्य करने के पश्चात अंत में मुझे शिविर अधिकारी द्वारा भीत भगवानपुर में शिविर लगाने का आदेश हुआ। मैंने जब अपने शीट को देखा तो रोमांच से भर गया, क्योंकि इस शीट के अनुसार इसके चारों ओर कमला और कोसी नदी जाती थी। यह क्षेत्र बाढ़ग्रस्त इलाका होने के कारण सर्वेक्षण कार्य मुश्किल होने वाला था। मैंने अपना शीट लिया और अपने स्क्वायड के साथ सवेरे भीत भगवानपुर चलने के लिए तैयार हो गया।

सुबह आठ बजे हमलोगा नाश्ता करने के बाद चलने के लिए तैयार हो गए। हमारी गाड़ी के साथ सामान से लदा एक मालवाहक गाड़ी भी था। मानचित्र का अध्ययन करते हुए हमलोग ठेंगा गाँव आ गए, जो कि कमला नदी के तट पर था। नदी के उस पार भीत भगवानपुर गाँव था, जहाँ हमें कैम्प लगाना था। नदी पार करने के लिए पुल वहाँ से 20 किमी दूर झंझारपुर में था। नदी में पानी कम था और छोटी गाड़ियाँ वही से आ-जा रही थी, यह सोच कर हम वहीं से नदी पार करने का निश्चय किया। उस जगह कमला नदी दो धाराओं में बंट गई थी, जो आगे जाकर पुनः एक हो गई थी। हमलोग पहली धारा को पार कर गए और दूसरी धारा की ओर बढ़ने लगे। रास्ते में एक छोटा सा गाँव दिखाई दिया और रास्ते में एक मंदिर भी था। लोगों ने बताया कि हर साल यह गाँव बाढ़ के पानी में डूब जाता है। परन्तु मंदिर ऊँचा होने कारण नहीं डूबता। हमलोग जब दूसरी धारा के पास पहुँचे तो देखा कि नदी में पानी अधिक था, लोगों ने गाड़ी पार करने के लिए ईंट-पत्थर डालकर नदी में ही आने-जाने का रास्ता तैयार कर लिया था। हमलोग नदी पार कर के उस तरफ पहुँच गए और भीत भगवानपुर गाँव में शिविर लगाने के लिए जगह तलाश करने लगे। गाँव में एक बड़े तालाब के किनारे स्थित एक सरकारी स्कूल में हमें शिविर लगाने की अनुमति मिल गई। वहीं पास में तालाब में मछलियाँ पकड़ी जा रही थीं। शिविर लगा देख एक आदमी मछली बेचने आया और कहा कि साहब! दरभंगिया रेहू है, ले लो, मैं भी दिन भर का थका था, और भूख भी सता रही थी। मैंने मछली खरीद ली। दूसरे दिन से सर्वेक्षण का कार्य शुरू करना था, इसलिए हमलोग सवेरे खाना खाकर सो गए।

अगली सुबह से हमलोगों ने सर्वेक्षण का कार्य शुरू कर दिया। चूँकि सारा इलाका बाढ़ग्रस्त था, रास्ते कई जगह टूटे हुए थे, कई जगह नए रास्ते बन रहे थे। उस क्षेत्र में सर्वेक्षण करने में हमें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। सभी जगह गाड़ी नहीं जा सकने के कारण अत्यधिक पैदल भी चलना पड़ा। इस तरह सर्वे का कार्य चलता रहा।

एक बार हमलोग कोसी बाँध को पार कर सर्वेक्षण कार्य करने गए। बहुत दूर जाने के बाद रास्ता खत्म हो गया। क्योंकि कोसी नदी की एक धारा रास्ता को तोड़ कर बह रही थी। मुझे उस पार सर्वेक्षण करने जाना था, इसलिए गाड़ी को वहीं लगाने कहा और मैं सर्वे करने चला गया। जब मैं लौट कर आया और वापस चलने के लिए कहा तो ड्राईवर ने गाड़ी घुमाया, तभी अचानक गाड़ी रेत में फंस गई। काफी मशक्कत करने के बाद भी गाड़ी रेत से बाहर न आई। मैं पास के गाँव में अपनी सहायता के लिए गया, इसके बावजूद भी गाड़ी रेत से बाहर न निकल पाई। शाम होने लगी थी। उधर से एक व्यक्ति धारा को पार कर अपने गाँव जा रहा था। उसने हमें वहाँ रेत में फंसा देखा तो तुरंत ट्रेक्टर का इंतजाम किया और रेत से गाड़ी निकालने में हमारी मदद की। वहाँ के लोगों की मदद को देख में बहुत प्रसन्न हुआ और धन्यवाद दे कर अपने कैम्प वापस आ गया।

उस शीट का सारा काम खत्म हो चुका था, सिर्फ एक कोने का कार्य बाकी था, जोकि कोसी नदी के दोनों बाँधों के पार था। दोनों बाँधों के बीच की दूरी 9 किमी थी एवं छोटी बड़ी कुल सात नदियाँ बह रही थीं। मानचित्र के अनुसार हमें एक रास्ते से पैदल ही सर्वेक्षण करते हुए उस पार जाना था, उस तरफ के क्षेत्र का सर्वेक्षण करने के पश्चात् पुनः दूसरे रास्ते से सर्वे करते हुए आना था। बस हमलोग सुबह चार बजे ही निकल पड़े और भेजा नामक गाँव में बाँध पर पहुँच गया। ड्राईवार को वहीं रूकने का निर्देश देकर हम लोग नाव से भुतही बलान नदी को पार कर गए। पैदल ही सर्वे करते हुए हमलोग पाँच नदी को पार कर गए। किसी नदी में नाव चल रही थी तो किसी में घुटने भर पानी पार करना पड़ा। छठी नदी पर पहुँचे जो कि सूखी थी। जब हम नदी पार कर उस तरफ पहुँचे तो वहाँ एक आदमी नदी पार करने का पैसा मांग रहा था। मैंने पहली बार देखा कि नदी को पैदल पार करने पर भी शुल्क देना पड़ रहा है।

सर्वे करते हुए हमलोग नदी के किनारे पहुँच गए जो कि कोसी नदी की मुख्य धारा थी। अत्यधिक डरावना, भयंकर और तेज धूप व हवा में उसकी लहरें और अधिक विकराल लग रही थी। मैंने देखा कि एक नाव लगी थी, जिसपर लोग बैठ रहे थे। हमलोग भी उस नाव पर जाकर बैठ गए। कुछ देर के बाद नाव भर गई, और नाव लहरों से लड़ती हुई इस पार से उस पार पहुँच गई। उस पार पहुँच कर मैंने देखा कि सभी लोग नाव से उतर

कर चले जा रहे थे। नाव चलाने वाला भी जा रहा था। बाद में पता चला कि नाव लगा रहता है और कोई भी उसे इस पार से उस पार ले जा सकता है। कोसी की विशाल धारा पर कोई नया नाविक भी नाव चलाता होगा यह सोच कर हमलोग डर गए। उस पार सर्वे का काम करने के बाद हमलोग वापसी के लिए मरिचा गाव पहुँच गए। यह गाँव पूरी तरह से खत्म हो चुका था। कोसी नदी एक रात इस गाँव के बीचों बीच बहने लगी थी। हमलोग कोसी नदी में घुटने भर पानी में लगभग आधा किलोमीटर चलने के बाद नाव पर बैठ कर दूसरी तरफ पहुँच गए। फिर सर्वे करते हुए भेजा के बाँध के नजदीक पहुँच गए। रात के आठ बज रहे थे और अभी एक नदी कमला पार करने के लिए बाकी थी। नाँव वाला भी चला गया था। उस पार कैसे जाऐं, समझ में नहीं आ रहा था। कुछ लोग नदी पार करने के लिए आ रहे थे, मैंने पूछा तो कहा कि पैदल ही पार करेंगे। हमलोग उसके पीछे-पीछे जाँघ भर पानी में नदी पार किये। उस तरफ बाँध पर गाड़ी लगी हुई थी, जिससे हमलोग रात के 11 बजे अपने कैम्प पहुँचे।

इस यात्रा के दौरान मैंने देखा कि कोसी और कमला नदी किस तरह मिथिला की धरती पर तांडव मचाती है। भीत भगवानपुर गाँव में एक अत्यधिक पुराना मंदिर था, जिसमें चारों तरफ भूमि से निकली हुई प्राचीन कालीन मूर्तियाँ पड़ी हुए जिसकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं था। अब हमें शिविर अधिकारी द्वारा वापस आने को कहा गया जहाँ से वापस हमें पटना में ज्वाईन करना था। पाँच माह के कठिन सर्वे कार्य जो कि जंगलों तथा पहाड़ों से शुरू होकर नदियों के बाढ़ग्रस्त क्षेत्र में खत्म हुआ। उसके बाद घर जाने की बात सुन कर हमलोग बहुत खुश हुए। इस तरह मेरा पहला फील्ड कार्य सत्र 2008-09 समाप्त हो गया।

थोड़ा मुस्कुराइए.....

- दो गप्पी अपनी-अपनी कला की प्रशंसा कर रहे थे। प्रत्येक एक दूसरे से ज्यादा स्वंय को माहिर साबित करने की कोशिश कर रहा था। पहला चित्रकार- ''मैं ने अंगूर का एक गुच्छा बनाया जो इतना असली प्रतीत हुआ कि एक बुलबुल आकर उसे चौंच मारने लगी।'' दूसरा चित्रकार- ''वह बुलबुल तो मैं ने ही बनाई थी, जो उड़ कर उस गुच्छे तक पहूँच गई थी।''
- दो दोस्त कई वर्षों बाद मिले।
  एक ने पूछा- ''यार, यह तो बताओ कि तुम्हारे कितने बेटे हैं और क्या-क्या काम करते हैं।''
  दूसरा दोस्त बोला- ''एक डाक्टर, दूसरा इंजिनियर और तीसरा .... उस कमबख़्त ने तो खानदान का नाम ही डूबो दिया। उसने बाल बनाने का काम शुरू कर दिया और अपनी दुकान चलाता है।''
  पहला दोस्त- ''ऐसे बेटे को तुम घर से निकाल क्यों नहीं देते?''
  दूसरा दोस्त- ''निकाल कैसे दूँ, वही तो घर का खर्च उठाता है।''
- बाबा- शीर्षासन करने से तुम्हारे पति की शराब पीने की आदत में कुछ फर्क आया क्या?
  महिला- ''जी बहुत बडा परिवर्तन आया है, अब वे सर के बल खडे होकर पूरी बोतल गटक जाते हैं।''

बच्ची प्रसाद सिंह
अधिकारी सर्वेक्षक

हिमालय की गोद में

मैं दिनांक 22.06.1015 को बाघ एक्सप्रेस से काठगोदाम स्टेशन के लिये प्रस्थान किया। मैं स्लीपर क्लास से यात्रा कर रहा था। वर्षा हो जाने से चल रही प्रचण्ड गर्मी से निजात मिल गयी थी। भारतवर्ष में यात्री की अधिकता तथा बिना आरक्षण कराये स्लीपर बोगी में पैसेन्जर के सवार हो जाने से जो परेशानी झेलनी पड़ती है, उसे झेलते हुये मैं यात्रा कर रहा था। दिनांक 23.6.2015 को सबेरे 9.30 बजे काठगोदाम स्टेशन सकुशल पहुँच गया। वहाँ से टैक्सी द्वारा हमलोगो को कुमायूं क्षेत्र में सतखोल को जाना था। हमलोग तीन आदमी थे। जैसे ही काठगोदाम पहुँचे वहा पर बहुत से टैक्सी ड्राइवर ने घेर लिया तथा अपने अपने गाड़ी से जाने के लिये आग्रह करने लगा। हमलोगों ने एक टैक्सी वाले से भाड़ा तय कर सतखोल के लिये चल दिया। मेरी पत्नी, मैं तथा मेरा साथी तीनों श्री राम चन्द्र मिशन के अभ्यासी हैं। तीनों ने सतखोल जो कि हिमालय आश्रम के नाम से प्रसिद्व है के लिये पहले से रजिस्ट्रेशन करा रखा था। काठगोदाम बिल्कुल हिलफुट में स्टेशन है। अंग्रेज द्वारा स्थापित रेलवे स्टेशन काठगोदाम से लकड़ी को बाहर भेजा जाता था। वहाँ पर लकड़ी का गोदाम था। जैसे ही काठगोदाम से आगे बढ़े, मेरे साथी ने ड्राईवर से पूछा क्या नैनीताल होकर जाते हैं? टैक्सी चालक ने कहा कुछ ज्यादा पैसा देने से नैनीताल होकर ले चलूंगा।

हमलोगों ने नैनीताल होकर ही ले जाने को कहा। काठ गोदाम से नैनीताल 35 किलोमीटर है। हमलोग पहाड़ में आगे बढ़े जा रहे थे। ड्राईवर भी बातुनी था। वह भी जरूरत से ज्यादा ही बताते चल रहा था। हमलोग नैनीताल पहुँचे। वहाँ पर नैनीताल झील को देखा। माल रोड पर घुमा। नैनीताल वास्तव में बहुत ही रमणीक जगह है। चारो तरफ पहाड़ियों से घिरा तथा पहाड़ों में होटल तथा भवन एवं बीच में सुन्दर झील तथा पर्यटकों की उपस्थिति बहुत ही मनभावन दृश्य प्रस्तुत कर रही थी। झील के उत्तरी छोर पर हिन्दुओं का प्रसिद्ध शक्तिपीठ नैना देवी का मन्दिर है। हमलोगों ने संक्षिप्त तरीके से इन स्थानों का अवलोकन किया। हमलोग नैनीताल को देखकर वहाँ से सतखोल के लिये आगे चल पड़े। रास्ते में बहुत

ही रमणीक दृश्यों को देखते हुये आगे बढ़ रहे थे। रास्ते में भावली रामगढ़ तथा नथुला होते हुए 12:50 में सतखोल स्थित श्री रामचन्द्र मिशन का हिमालयन आश्रम पहुच गया।

सतखोल नैनीताल जिला में मुक्तेश्वर से 10 किलोमीटर की दूरी पर है। सतखोल आश्रम बहुत ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य प्रदान करने वाला स्थल है। वहाँ से उत्तर दिशा में बहुत दूर तक देख सकते थे। कुमायूँ की घाटियाँ तथा घनी आबादी वाला शहर अल्मोड़ा सामने था। यह समुद्रतल से करीब 1900 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है। सुदूर उत्तर में छोटी तथा बड़ी पहाड़ियों के बाद क्षितिज ही था जो कि बादलों से ढका था। वहाँ के आश्रमवासी कहते थे कि जब आकाश पूरा साफ होता है तो हिमालय पर्वत दिखाई देता है। काठगोदाम से सतखोल की निकटतम दूरी सड़कमार्ग से 75 किलोमीटर है। नैनीताल होकर उससे 15-20 किलोमीटर ज्यादा ही होगा। सतखोल आश्रम हमलोगों के लिये दो दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है एक है अध्यात्मिक तथा दूसरा प्राकृतिक। वैसे भी उत्तराखण्ड को देवभूमि कहा गया है। इस हिमालयी क्षेत्र में बहुत सारे तीर्थस्थल हैं तथा यह सन्यासियों की साधना स्थली रही है। मेरे लिये भी यह जगह दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण था। शुद्ध प्राकृतिक वातावरण, प्राकृतिक दृश्य प्रदान करने वाली तथा अध्यात्मिक महौल बहुत ही आनंददायी लग रहा था। हमलोगों का वहाँ रहने का 23.06.15 से 28.06.15 सुबह तक पूर्व निर्धारित कार्यक्रम था। मैं आश्रम के नियम के अनुसार रहने लगा। सुबह शाम दो बार एक-एक घंटा ध्यान करते थे। बाकी समय में लायब्रेरी में किताबों का अध्ययन, विडियो देखना तथा दो घंटों के लिये आश्रम के बगीचे में बागवानी का काम करना होता था। हमलोग दो दिन बागवानी भी देखने गये, जिसमें नाशपाती, सेब, संतरा, चीकू, अलबखुरा(प्लम) इत्यादि फलों के पेड़ थे तथा ज्यदातर में फल लगा हुआ था। वहाँ पर पहाड़ों में चीड़ के बड़े-बड़े पेड़ थे। वहाँ पर सीढ़ीदार खेतों में सब्जी की भी खेती की जाती है। खाने में आश्रम के बगीचे का ही सब्जी प्रयोग किया जाता है।

दिनांक 24.06.15 को दिन भर बारिश होती रही। बारिश में तो केवल बादल ही दिखता था। सामने में कुछ भी नहीं दिखता था। दो रात और एक दिन के लगातार बारिश के बाद दिनांक 26.06.15 को जब सुबह उठे तो बारिश हो ही रही थी। हमलोग 6.30 बजे छाता लेकर ध्यान कक्ष गये थे। एक घंटे बाद जब लौटे तो बारिश छूट चुकी थी। बाहर देखते है तो घाटियों में जगह-जगह सफेद बादलों का झुंड स्थिर अवस्था में है। उसे देखकर हम रोमांचित हो रहे थे। घाटी जो बादलों से पूर्ण रूप से ढकी रहती थी, साफ हो गयी। सिर्फ जगह-जगह सफेद बादल धुने हुए रूई के सामान जमे बैठे थे। सफेद बादल को इतने नजदीक

से देखने का पहला अवसर था। फिर देखते है कि सफेद बादलों ने विचरण करना शुरू कर दिया। पूरी घाटी में सफेद बादलो का मद्धिम हवा के झोंके से विचरण शुरू हो गया। बहुत देर तक बादलों के विचरण तथा अटखेलियों को देखता रहा। जब इन प्राकृतिक दृश्यों पर विचार किया तो लगा मानो बादल तैयार बैठा था, फिर लगा कि वह अपना मंचन करने लगा। प्रकृति के द्वारा इस तरह के दृश्यों का प्रर्दशन वास्तव में स्वर्ग का सुख प्रदान कर रही थी। हमारे शिक्षक कहा करते थे कि सतखोल धरती का स्वर्ग है। आज उसका अनुभव मैंने किया। कुछ देर बाद देखते है कि उत्तर दिशा का बादल भी छँट गया। उस बादल वाले जगह के पीछे बहुत ही ऊँचा पर्वत दिखाई देने लगा। वह ऊँचा पर्वत भारतीय क्षेत्र में हिमालय की सबसे ऊँची चोटी नन्दा देवी थी। नन्दा देवी पर्वत पर भी ज्यादातर हिस्सों में बर्फ जमी था। उसके पीछे तथा दायें-बायें हिमालय का बर्फ से ढ़का ग्लेशियर क्षेत्र स्पष्ट रूप से दिख रहा था। सतखोल से हिमालय का दर्शन कर अपने को हिमालय की गोद में महसूस कर रहा था। इस दर्शन के लिये ईश्वर को मन ही मन धन्यवाद दिया। प्रकृति भी ईश्वर का ही रूप है। आज दो घंटे में प्रकृति ने अपने इतने सारे रूपों से रूबरू कराया। इसलिए इस प्रकृति माँ को मेरा सत्-सत् नमन। हम इंसान प्रकृति को कुछ तवज्जो नहीं देते हैं, जब यही प्रकृति अपना रौद्र रूप धारण करती है तो फिर ईश्वर को पुकारने लगते हैं।

रात के समय इस कुमाऊँ क्षेत्र में बिजली की जगमगाती रोशनी बहुत ही मनभावन दृश्य प्रस्तुत करती है। इस शुद्व प्राकृतिक तथा आध्यात्मिक वातावरण में पाँच दिन बिताने के बाद 28.06.15 को 01.30 में सतखोल से वापस काठगोदम के लिए कार से चल दिया। लौटते समय सोच रहा था हमारे सर्वे वाले भाई कितने कठिनाई से इन स्थानों का सर्वे करते हैं। आते समय भीमताल होकर लौटा। भीमताल बहुत ही अच्छी जगह है। वहाँ का भीमताल काफी बड़ी झील है। वहाँ का दृश्य भी काफी मनोरम है। पर्यटक जो नैनीताल आते हैं वे भीमताल को भी जरूर देखने आते हैं। भीमताल पर्यटन के साथ शिक्षण संस्थान के लिए प्रसिद्वि पा चुका है। हमलोग भीमताल होते हुए पाँच बजे शाम काठगोदाम रेलवे स्टेशन पहुँच गये। रात में 21.55 पर बाघ एक्सप्रेस से हाजीपुर के लिये रवाना हुए। दूसरे दिन 29.06.15 को शाम 7.30 बजे हाजीपुर पहुँच गये। हाजीपुर से साथी के कार से सकुशल पटना पहुँच गये।

मैथिली लोक कहानियाँ

विपिन कुमार चौधरी
सर्वेक्षक

गोनू झा अपनी माँ के साथ गाँव में रहते थे। घर के पास कुछ खेत था जिसका बड़ा हिस्सा बंजर था और थोड़ा बहुत कम उपजाऊ था। एक साल वर्षा नहीं होने के कारण आकाल की स्थिति आ गई थी। घर के पास वाले खेत में उपज नहीं हुआ जिस कारण दोनों माँ बेटे चिंतित रहने लगे। गोनू झा के पास जंगल पार कुछ खेत था। एक दिन गोनू झा ने माँ से कहा कि माँ, गाँव में तो उपज नहीं होने वाला है तो मैं जंगल पार वाले खेत में ही खेती करने जाता हूँ।

दूसरे दिन गोनू झा एकदम सवेरे भूखे पेट खेत पर काम करने चले गये। इधर माँ खाना बना कर गोनू झा के लिए दोपहर का खाना लेकर चली। रास्ता जंगल होकर था। उस जंगल में बहुत सारे गीदड़ रहते थे। गीदड़ का सरदार ने जब गोनू झा की माँ को देखा तो बोला कि हे गोनू झा की माँ थोड़ा मेरा ढ़ील (जूँ) निकाल दे। गोनू झा की माँ ने गीदड़ों को देखा तो डर गई और चुपचाप जूँ निकालने लगीं। गोनू झा की माँ जूँ निकाल रही थी और गीदड़ गोनू झा के खाना को गीज-मांज (बर्बाद) कर रख दिया। फिर गोनू झा की माँ खाना लेकर गोनू झाा के पास गई और उसे खाने के लिए दिया। खाना देखकर गोनू झा का मन विचल गया, परन्तु भूख लगा होने के कारण खाना खा लिया, ऐसा प्रतिदिन होने लगा। एक सप्ताह बाद गोनू झा खाना देख कर माँ से कहा कि अगर तुमसे खाना नहीं बनता है तो मत बनाओ लेकिन ऐसा स्वादहीन खाना नहीं बनाओ। उनकी माँ बोली - अच्छा खाना ही लेकर चलती हूँ, पर रास्ते में गीदड़ सब खाना गन्दा कर देते हैं। यह सुन गोनू झा बोले माँ तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?''

दूसरे दिन गोनू झा ने माँ से कहा- ''आज तुम घर पर ही रहो और खुद साड़ी पहन लिये और खाना लेकर जंगल की तरफ चल दिये। रोज की तरह गीदड़ ने कहा- ''ऐ गोनू झा की माँ जू निकाल दो।'' बस गोनू झा ने खाना नीचे रखा और जूँ निकालने लगे। गीदड़ खाना को गिजने लगा, इधर गोनू झा ने चाकु निकाला और गीदड़ का पूँछ काट दिया। बस गीदड़ बाप बाप करता भागा और अपने बिल में जा कर छुप गया। गोनू झा वापस आये और बोले माँ अब वह गीदड़ तुम्हें तंग नहीं करेगा।

इधर शाम हुआ जंगल में सभी गीदड़ हुआ-हुआ करने लगे। अपने सरदार को नहीं देखा तो चारों तरफ ढूँढने लगे। सरदार को बिल में छुपा देखा तो कारण पूछा। सरदार ने सभी बातें बता दी। सब ने कहा कि- ‘‘गोनू झा की इतनी हिम्मत! चलो उसका खेत बर्बाद कर देते हैं।’’ सभी गीदड़ों ने मिल कर गोनू झा के खेत को तहस-नहस कर दिया। गोनू झा ने जब खेत की स्थिति को देखा तब सोचा कि इस तरह तो इस खेत में यह गीदड़ सब कुछ भी नहीं होने देगा तो इसका कुछ उपाय करना होगा।

गोनू झा ने माँ को समझा बुझा कर गीदड़नी के पास भेजा। गोनू झा की माँ गीदड़नी के पास जा कर बोली की मेरा बेटा खेत की स्थिति देख कर मर गया। आज उसका भोज है, आप सब जरूर आइयेगा। सभी गीदड़ बोले कि हम सब जरूर आयेंगे। इधर गोनू झा लाठी को तेल में डाल कर रख दिया की आज सभी गीदड़ को मजा चखाना है।

शाम में सभी गीदड़ समय से पहुँच गये। बहुत बड़े दलान (खुला जगह) में बीच में बाँस गड़ा हुआ था जिसमें कराम (धान की दौनी करने के लिए बैलों को बाँध कर बाँस के चारों तरफ घुमाया जाता है) लगा हुआ था। माँ ने सभी गीदड़नी को कराम में बाँधने लगी। अपनी गर्दन को बाँधते देख गीदड़ ने कहा यह क्या कर रही हो? तब गोनू झा की माँ ने कहा की तुम सब जंगली हो, खाना पत्ता पर देख एक दूसरे का खाना खाने लगोगे तो इससे सभी को सही से भोजन नहीं मिल पाएगा। हमारे पास खाना पर्याप्त है, अतः सभी लोग भरपेट खाना खाइये। सभी गीदड़ यह सुन कर खुश हो गए और एक-दूसरे को कस कर बँधवाने लगे। जब सभी गीदड़ कस कर बाँधे गए, तब गोनू झा लाठी लेकर निकला और एक तरफ से सभी गीदड़ों को एक तरफ से मारने लगा। मार खाते-खाते जब गीदड़नी का हालत खराब हो गई, तब एक बूढ़े गीदड़ ने कहा कि बचना है, तो सब एक साथ दम लगा कर कराम को तोड़ दो। सब एक साथ दम लगा कर कराम को तोड़ दिये और लेकर भाग गये। रात में जंगल में बैठक बुलाई गई और सब ने मिलकर जंगल छोड़ने का निर्णय लिया। बूढ़े सरदार ने कहा की हमने सिर्फ गोनू झा का खेत नष्ट किये तो इतनी मार पड़ी है और अगर उसका कराम (रस्सी) लेकर चले गये तो उस जंगल में जाकर भी मारेगा। इसलिए उसका कराम वापस करना होगा, लेकिन वापस करने जाएगा कौन?

अंत में निर्णय हुआ कि हम जमीन के नीचे बिल बना कर जाऐंगे और कहेंगे कि हमें माफ करो और अपना कराम वापस लो, हम सब जंगल छोड़ कर जा रहे हैं। जब सभी गीदड़ गोनू झा के पास पहुँचे और अपनी बात कही तो गोनू झा मुस्कारने लगा और

बोला- ''पानी तो पीते जाओ।'' सभी गीदड़ जान बचा कर भागे और बोले- ''भोज तो खा चुके, अब पानी ही बाकी है।''

कुछ दिनों बाद गोनू झा की शादी हुई। एक बार उनकी पत्नी अपने मायके में थी। वे पत्नी से मिलने के लिए अपने ससुराल को चल दिये। रास्ते में कमला नदी में बाढ़ आई हुई थी। कोई नाव वाला उस पार नहीं जाने के लिए तैयार नहीं था। उस पार कैसे जाऐं, यह सोचकर गोनू झा परेशान हो रहा था, तभी उन्हें एक सनगोह (पानी का जानवर) दिखाई दिया, जो चुपचाप उदास बैठा था। गोनू झा ने उससे पूछा की तुम क्यों उदास बैठे हो, तो सनगोह ने कहा की उसकी शादी नहीं हो पा रही है। तब गोनू झा ने अपने माथे पर चंदन का लेप लगाया और कहा की उस पार नदी में उसके लिए कन्या मिल जायेगी। ''मैं भी उस पार जाना चाहता हूँ-'' गोनू झाा ने कहा। यह सुनकर सनगोह बोला कि आप पण्डित लगते हैं, आप मेरे पीठ पर बैठ जाइये, मैं आपको उस पार पहुँचा देता हूँ। गोनू झा डरते-डरते पीठ पर बैठ गया और उस पार हो गया और सनगोह के लिए कन्या ढूँढ कर लाने की बात कह कर आगे बढ़ गया। कुछ दिनों बाद जब ससुराल से वापस अपने गाँव के लिए चला तो रास्ते में फिर वही नदी आया। फिर नदी पार करने की समस्या थी, तभी वही सनगोह मिला। उसने कहा कि पण्डित जी मेरे लिए कन्या ढूँढे या नहीं। गोनू झा ने कहा कि हाँ, मैंने तुम्हारे लिए अति सुन्दर दुल्हन ढूँढा हूँ, परन्तु मैं अपना पतरा (पंचांग) गाँव में ही भुल आया हूँ, वही लेने जा रहा हूँ, पर नदी कैसे पार करूँ। सनगोह ने पुनः गोनू झा को अपने पीठ पर बिठा कर नदी पार करा दिया। जब वह नदी पार हो गया तो गोनू झा ने कहा कि अरे बेवकूफ- कभी सनगोह का विवाह भी पतरा देख कर होता है क्या? यह कहकर गोनू झा वहाँ से चला गया। सनगोह को बहुत बुरा लगा और बदला लेने के लिए गोनू झा के पीछे पीछे उनके गाँव आ गया और उनके तालाब में छुप गया। एक दिन शाम में गोनू झा पाँव धोने के लिए तालाब पर गया और जैसे ही पाँव पानी में उतारा, सनगोह ने उनका पाँव पकड़ लिया और खिंचने लगा। अब गोनू झा की हालत खराब, क्या करें, वे जोर से चिल्लाये भगवान का शुक्र है कि पहले मैंने लाठी (छड़ी) को पानी में डुबोया था, कहीं पैर डुबता तो आज मैं मारा ही जाता। यह सुन सनगोह ने लाठी पकड़ा हूँ, यह सोच कर उनका पाँव छोड़ दिया। गोनू झा वहाँ से भाग कर घर आ गये। अब गाँव में रहना खतरनाक है यह सोच बगल के गाँव में अपने दोस्त के पास जाने का फैसला कर लिया।

अपनी पत्नी के साथ दोस्त के यहाँ जाने का फैसला कर घर से निकल पड़ा। गाँव के बाहर रास्ते में देखा कि वह सनगोह मरा पड़ा है। सनगोह को मरा देख गोनू झा बहुत खुश हो गये लेकिन डरते-डरते पास गये और अपनी पत्नी से बोले- ‘‘सनगोह जब मरता है, तब उसकी आँखें तो खुली रहती हैं, इसकी तो बंद हैं, लगता है यह जिन्दा है। सनगोह ने अपनी आँखें खोल दी। गोनू झा चिल्लाये भागो यह जिन्दा है।

गोनू झा काफी परेशान रहने लगे, उनकी परेशानी देखकर उनकी पत्नी ने एक तरकीब निकाली। जहाँ सनगोह रहता था वहाँ जाकर चिल्ला-चिल्ला कर बोलने लगे कि गाँव के तालाब में सनगोह ने अपने बेटी की शादी के लिए स्वंयवर रखा है, जो प्रातः काल उस तलाब पर पहले जा कर सबसे तेज दहाड़ेगा, उससे वह अपनी बेटी की शादी कर देगा। सनगोह सुबह सवेरे तालाब पर पहुँच कर दहाड़ना शुरू कर दिया। उस तालाब पर वहाँ के जमींदार की बेटी नहाने आती थी। जब वह तलाब पर पहुँची तो वह सनगोह की आवाज सुनकर डर से चिल्लाने लगी। उसकी आवाज सुन कर जमींदार के सैनिक वहाँ आ गये और उस सनगोह की तीर भाला से मार गिराया और इस तरह गोनू झा की जान उस सनगोह से बच गई।

।। हजल ।।

जब से बेगम ने मुझे मुर्गा बना रखा है।
मैंने नजरों की तरह सर भी झुका रखा है।।
बरतनों! आज मेरे सर पर क्यों बरसते हो।
मैं ने तुम को तो हमेशा से धुला रखा है।।
पहले बेलन ने बनाया था मेरे सर पे गूमढ़।
अब चिमटे ने मेरा गाल सजा रखा है।।
सारे कपड़े तो जला डाले हैं बेगम ने।
तन छुपाने को बनियान फटा रखा है।।
वही दुनिया में मुकद्दर का सिकन्दर यहाँ ठहरा।
जिस ने खुद को शादी से बचा रखा है।।
पी जा इस मार की तल्खी को भी हंस कर नासिर।
मार खाने में कुदरत ने मजा रखा है।।

-साभार

आनन्द कुमार रॉय
सर्वेक्षण सहायक

10 मंत्र खुशी के

1. यदि आप में जरा भी नकारात्मकता है तो अपने नकारात्मक व्यवहार को अलविदा कह दें। हालाँकि ऐसा करने के लिए आप की इच्छा शक्ति बहुत मजबूत होनी चाहिए। नकारात्मकता दूर हो गई तो, हर स्थिति में प्रसन्न रहेंगें।
2. कोई कार्य तभी कठिन प्रतीत होता है, जब आप उसे मन से न करना चाहें। अगर मन में यह भाव रखें कि मैं सब कुछ कर सकता हूँ तो कोई कार्य आपको कठिन नहीं प्रतीत होगा बल्कि आनंद ही मिलेगा।
3. उन कारणों पर ध्यान देने का प्रयास करें, जिनसे आप प्रसन्न होते हैं। इसी तरह जिन बातों से आप दुःखी होते हैं, उन कारणों को भी समझने का प्रयास करें।
4. किसी बात को लेकर यदि आप असमंजस में पड़े हैं तो ऐसी स्थिति में अपने अंतर्मन की पुकार सुननी चाहिए।
5. लोगों की प्रशंसा करना सीखिए। अगर कोई आप के काम आता है उसके प्रति हृदय में श्रद्धा का भाव रखिए।
6. जब भी मौका मिले मनपसंद संगीत सुने। अगर आप किताबें पढ़ने की शौकीन हैं तो खाली समय में या समय निकालकर किताबें अवश्य पढ़ें।
7. कोई भी संपूर्ण नहीं होता है। अपने को संपूर्ण बनाने की कोशिश में न पड़कर बेहतर करने की सोचें।
8. अपने जीवन को प्रेम से भरिए। प्रेम किसी के साथ भी हो सकता है और अपने काम से भी। यदि आप का हृदय प्रेम से भरा है तो आप सबसे सुखी इंसान हो सकते हैं।
9. किसी का भला करते वक्त यह सोचकर न भला करिए कि सामने वाला आप का भला करेगा या नहीं, इससे आप कभी उदास नहीं रहेंगे।
10. अपनी खूबियों और खामियों को किसी डायरी में रोज लिखें या जब भी मौका मिले तब लिखें। कुछ दिनों के बाद आपकी कमियाँ अपने आप कम हो जाएगी।

बच्ची प्रसाद सिंह
अधिकारी सर्वेक्षक

स्वच्छता को समर्पित ये मलीन

यारपुर पुल के नीचे तथा अगल-बगल न्यू अम्बेडकर कॉलोनी बसा है। आर-ब्लॉक पैदल जाने के लिये प्रायः इधर से ही रेलवे लाइन पार कर जाते है। एक बार उधर से गुजर रहा था एकाएक विचार आया कि आखिर ये लोग मलिन क्यों हैं? इसपर विचारों मे डुब गया। विचार तो बहुत सारे थे लेकिन विचारों का निष्कर्ष मन को झकझोरने वाला था। ये सफाइ कार्यों में लगे लोग हमारे द्वारा उत्सर्जित गन्दगी को बिना किसी अवरोध के साफ करते हैं। हम लोगों को स्वच्छ वातावरण प्रदान करतें हैं। ये लोग अपना पेट चलाने के लिए सभ्य समाज द्वारा उत्सर्जित गंदगी को साफ करने में लगे रहते हैं। ये जन्मजात सफाईकर्मी तथा दलित वर्ग बिना किसी गिला शिकवा के समाज के अन्य वर्गो के द्वारा फैलाये गंदगी को साफ करते-करते उनका तन मन तथा रहन सहन वैसा ही हो जाता है। गंदगी के प्रति तनिक भी घृणा भाव का विचार खत्म हो जाता है एवं लंबे समय में एक संस्कार हो जाता है वह इसे अपने नियती समझने लगता है कि मेरा जन्म इन्ही कर्मों के लिए हुआ है। इस प्रकार हम यह समझ सकते हैं कि अन्यों को स्वच्छ रखने के लिए खुद मलिन बन जाते हैं।

एक बार मैं उड़ीसा में सर्वेक्षण करने फील्ड गया था वहाँ पर एक ग्रामीण को पानी का बोतल देकर पानी लाने को कहा उस आदमी ने पानी का बोतल छूने तथा पानी देने से साफ इंकार कर दिया, वह उड़िया में बोला जिसका हिन्दी इस प्रकार है कि- ‘‘मैं आपको पानी नहीं दे सकता। यदि मैं आपको पानी दे भी दूँ, तो गाँव वाले मुझे दंडित करेगे।’’ उपरोक्त घटनाओं से हम इनलोगो की मनः स्थिति को समझ सकते हैं।

उघर दूसरे तरफ अपने को स्वच्छ कहने वाले एवं गंदगी फैलाने वाले इनके साथ अमानवीय वर्ताव करते हैं तथा अछूत समझते हैं। ये लोग गंदगी फैलाने में तनिक भी परहेज नहीं करते हैं। मैंने आते-जाते ऐसे अनेक लोगों को देखा है, जो पान गुटका खा कर साफ-सुथरे सड़क पर पिच-पिच करते तनिक भी नहीं शर्माते हैं। अपने घर का कचड़ा सड़क पर फेंकते हैं।

यह कैसी विडम्बना है, जो स्वच्छता के लिए कार्य करे उसे मलिन कहा जाता है। यदि ये स्वच्छकर्मी अपना काम करना बंद कर दे तो हमारी स्वच्छता पर ग्रहण लग जायगा। महात्मा गाँधी ने इन्ही स्वच्छकर्मियों को हरिजन कहा था जिसका वास्तविक अर्थ भगवान का

आदमी होता है। फिर भी बहुत सारे लोग अभी भी उन्हें अछूत मानते हैं। मेरा मानना है कि इन स्वच्छ सेवकों को अछूत न समझे बल्कि उनके साथ मिलजुल कर उनके मानसिक स्तर को भी ऊँचा उठाये। हालाँकि सरकार द्वारा इनका जीवन स्तर उठाने के लिए प्रयास भी किये जा रहे हैं लेकिन यह अभी तक नाकाफी है।

आजकल माननीय प्रधानमंत्री के आह्वान पर हाथ में झाड़ू पकड़कर फोटो खिचवाने तथा मीडिया में आने की होड़ मची हुई है, इसे महज फोटो तक सीमीत न रखकर दिल से अपनाने की जरूरत है। इसे चन्द स्वच्छ कर्मियों के भरोसे नहीं छोड़ा जाना चाहिये।

बिहार गीत

मेरे भारत के कंठहार,
तुझको शत-शत वंदन बिहार
तू वाल्मिकि की रामायण
तू वैशाली का लोकतंत्र
तू महाबुद्ध की करूणा है
तू महावीर का शांति मंत्र
तू ज्ञानदीप नालंदा का
तू ही अक्षत चंदन बिहार
तू है अशोक का धर्मचक्र
त गुरू गोविंद की वाणी है
तू आर्यभट्ट, तू शेरशाह
तू कुंवर सिंह बलिदानी है
तू ही बापू की कर्मभूमि
धरती पर नंदन वन बिहार
तेरा अतीत गौरवशली
तुझको शत-शत वंदन
तेरा समृद्ध है वर्तमान
अब जाग उठे तेरे सपूत
लौटेगा खोया स्वाभिमान

-सत्य नारायण

धर्मेन्द्र कुमार
स्टेनो ग्रेड - III

असफलता का भय

इस बात का शोक मत करो कि मुझे बार-बार असफल होना पड़ता है। परवाह मत करो क्योंकि समय अनंत है। बार-बार प्रयत्न करो और आगे की ओर कदम बढ़ाओ। निरंतर कर्त्तव्य करते रहो, आज नहीं तो कल तुम सफल होकर रहोगे।

सहायता के लिए दूसरों के सामने मत गिड़गिड़ओ क्योंकि यथार्थ में किसी में भी इतनी शक्ति नहीं है जो तुम्हारी सहायता कर सके। किसी कष्ट के लिए दूसरों पर दोषारोपण मत करो, क्योंकि यथार्थ में कोई भी तुम्हें दुःख नहीं पहुँचा सकता। तुम स्वंय ही अपने मित्र हो और स्वंय ही अपने शत्रु हो। जो कुछ भली - बुरी स्थितियाँ सामने हैं, वह तुम्हारी ही पैदा की हुई है। अपना दृष्टिकोण बदल दोगे तो दूसरे ही क्षण यह भय तुम्हारे अंदर से निकल जाएगा।

निंदा और द्वेष

दूसरों के छिद्र देखने से पहले अपने छिद्रों को टटोलो। किसी और की बुराई करने से पहले यह देख लो कि हम में तो कोई बुराई नहीं है। यदि हो तो पहले उसे दूर करो। दूसरों की निंदा करने में जितना समय देते हो उतना समय अपने आत्मोकर्ष में लगाओ। तब स्वयं इससे सहमत होगे कि परनिंदा से बढ़ने वाले द्वेष को त्यागकर परमानंद प्राप्ति की ओर बढ़ रहे हो।

संसार को जीतने की इच्छा करने वाले मनुष्यों पहले अपने को जीतने की चेष्टा करो। यदि तुम ऐसा कर सके तो एक दिन तुम्हारा विश्वविजेता बनने का स्वप्न पूरा होकर रहेगा। तुम अपने जितेंद्रिय रूप से संसार के सब प्राणियों को अपने संकेत पर चला सकोगे। संसार का कोई भी जीव तुम्हारा विरोधी नहीं रहेगा।

अरूण कुमार विश्वास
प्रवर श्रेणी लिपिक

हजरत मुहम्मद

एक दिन हजरत मोहम्मद कहीं जा रहे थे। हजरत से चिढ़कर एक वृद्धा घर के ऊपर से हजरत के सर पर कूड़ा डाल देती थी। प्रतिदिन ऐसा ही होने लगा। जब एक दिन हजरत के सर पर कूड़ा नहीं डाला गाया तो हजरत सोचने लगे, आखिर आज कूड़ा डालने वाला चला कहाँ गया, जो मेरे ऊपर कूड़ा नहीं डालने आया। हजरत उसे देखने वृद्धा के घर गए। वहाँ वह देखते हैं कि वह वृद्धा जो उनके उपर प्रतिदिन हजरत मुहम्मद पर कूड़ा डालती थी, जिसे हजरत कुछ नहीं कहते थे, बीमार पड़ी बेड पर कराह रहीं है। हजरत उसे देखकर उसका प्राथमिक उपचार किये एवं उसे शीघ्र स्वस्थ होने का आशीर्वाद दिये। उस वृद्धा ने हजरत से क्षमा माँगी और फिर कभी ऐसी गलती नहीं करने की कसम खाई।

इब्राहीम

इब्राहीम साधारण ढंग से रहता था, जिसे एक अमीर ने एक आम के बगीचे में आम का देख-भाल का काम करने सौंप दिया। इब्राहीम आम के पेड़ों का देख-भाल करने लगा। एक दिन बगीचे के मालिक ने इब्राहीम से कहा- ''इब्राहीम ज़रा पके-पके आम तोड़कर खाने के लिए लाओ।'' इब्राहीम ने वैसा ही किया, जब मालिक आम खाने लगा तो इब्राहीम को डाँटने लगा। इब्राहीम बोला- ''महाशय! आप मुझे डाँट क्यों रहे हैं।'' मालिक बोला- ''तुम्हें इस बगीचे में काम करते हुए इतने दिन हो गए, अभी तक तुम्हें यह मालूम नहीं कि किस पेड़ का आम मीठा है और किस पेड़ का खट्टा। तुमने खट्टा आम लाकर मुझे दे दिया।'' इस पद इब्राहीम बड़े प्यार से बोला- ''महाशय! आपने तो मुझे इस बगीचे का सिर्फ देख-भाल का काम सौंपा है, आपने मुझे आम खाने की इजाजत कहाँ दी है, जो मुझे पता होगा कि किस पेड़ का आम मीठा है और किस पेड़ का आम खट्टा? '' इब्राहीम की इस बात पर बगीचे का मालिक दंग रह गया। वह समझ गया कि इब्राहीम कोई साधारण व्यक्ति नहीं है।

***

अभिमन्यु सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

अभिनव की सूझ-बूझ

स्कूल की परीक्षाएँ समाप्त हो चुकी थी। गर्मियों की छुट्टियाँ आरंभ हो गई थीं। अभिनव एक बहुमंजिला बिल्डिंग में रहता था, जिसका नाम मधुवन था। इसमें सात मंजिलें थीं। अभिनव का घर पाँचवें मंजिल पर था। बिल्डिंग के सारे बच्चे हर वक्त खेल-कूद और धमा चौकड़ी में लगे रहते थे। रात में सभी बच्चे थक-हारकर गहरी नींद में सो जाते थे।

एक दिन अभिनव की नींद सुबह पाँच बजे खुल गई। सारी बिल्डिंग में हंगामा मचा हुआ था।

आग...! आग...! भागो...! भागो...!! बिल्डिंग में आग लग गई है। सब लोग तुरंत बाहर निकल जाऐं। अभिनव जल्दी से उठकर बाहर की ओर भागा। जल्द ही सारे लोग कंपाउंड में जमा हो गए। ''शायद वहीं शॉर्ट-सर्किट हो गया है।'' कोई कह रहा था।

''रिंकी नहीं दिखाई दे रही।'' रिंकी की मम्मी की घबराहट भरी आवाज सुनाई दिया। रिंकी का घर तीसरे मंजिल पर था। अभिनव ऊपर की ओर देखा तो रिंकी बालकनी में खड़ी थी। वह जोर-जोर से रो रही थी। आग सारे बिल्डिंग में फैल चुकी थी। कोई भी अंदर नहीं जा सकता था। किसी को समझ में नहीं आ रहा था कि रिंकी को कैसे बचाऐं?

तभी एक गुब्बारेवाला गैस से भरे गुब्बारे लेकर वहाँ से गुजर रहा था। अचानक अभिनव को कुछ सूझा। वह दौड़कर गुब्बारे वाले के पास गया और एक बड़ा सा गब्बारा लिया।

''भैया एक धागे का रोल भी देना प्लीज।'' अभिनव बोला, और जल्दी से स्कैच पेन से गुब्बारे पर बड़े अक्षरों में कुछ लिखने लगा। उसने धागे का पूरा रोल गुब्बारे के साथ बाँध दिया और धीरे-धीरे गुब्बारे को ऊपर की ओर छोड़ने लगा। रिंकी का ध्यान गुब्बारे की ओर गया और वह उस पर लिखा संदेश पढ़ने लगी, - बिल्डिंग के पीछे रेत का ढ़ेर लगा है। पीछे की बालकनी से नीचे पड़ी रेत पर कूद जाओ। यह पढ़ते ही अन्दर की ओर भागी और थोड़ी ही देर में धप्प से कूदने की आवाज आई।

अभिनव रिंकी की मम्मी और अन्य लोग भी दौड़कर बिल्डिंग के पीछे पहूँचा और रेत पर पड़ी रिंकी को उठाकर गले से लगा लिया।

सभी लोग बोले- ''अभिनव बेटा, आज तुम्हारे कारण ही रिंकी की जान बच सकी है।'' तभी फायर ब्रिगेड की गाड़ी भी आ गई। जल्द ही उन्होंने आग पर काबू पर लिया।

अभिनव की सूझ-बूझ ने रिंकी की जान बचा ली। उसकी माँ का सिर गर्व से ऊँचा हो गया।

सहकर्मी

पिछले पाँच वर्षों से एक दफ्तर में आमने-सामने बैठते थे,
पर वे रहस्य थे एक-दूसरे के लिए।
पहला जब हर हफ्ते एक नई कमीज पहन कर आता,
तो दूसरा अनुमान लगाता उसकी ऊपरी कमाई के बारे में।
दूसरा जब हर बात पर ठहाके लगाता तो,
पहला समझने की कोशिश करता, उसके स्वस्थ और प्रसन्न रहने का राज।

दफ्तर में दोनों साथ बैठकर नाश्ता करते और
पहले की टिफिन से सब्जी के कुछ टुकड़े चखने के बाद,
दूसरा सोचता पहले की पत्नी की पाक कला के बारे में,
फिर वह कुढ़ता अपनी पत्नी पर मन-ही-मन।

पहला जब गप्पें हाँकता तो दूसरा भी कुछ किस्से गढ़ता,
पहला अपने दादा के जमींदारी ठाठ की चर्चा करता,
तो दूसरा किसी मंत्री से अपनी रिश्तेदारी की बात करता।

नाइट ड्यूटी से लौटते दोनो साथ सूनी सड़क पर दूर से
दो छायाएं एक-दूसरे में घुलती-मिलती हुई चलती नजर आतीं।
कभी पहला गुनगुना रहा होता तो दूसरा सीटी बजा रहा होता,
इस वक्त दोनों बेहद जरूरी होते एक-दूसरे के लिए।
इस समय दोनों हर मुद्दे पर सहमत होते,

दूसरा जब अपने अधिकारी की शिकायतें करना शुरू करता,
पहला हाँ में हाँ मिलाता, फिर वह कोई जुमला कहता,
अधिकारी का मजाक उड़ाते हुए दोनो हँस पड़ते जोर से,
पर अगले ही दिन जब अधिकारी डाँट पिलाता दूसरे को,
तो वह सोचता जरूर शिकायत की होगी पहले ने ही,

जब सिर्फ पहले को मिला प्रमोशन दूसरा गुमसुम रहने लगा,
वह दार्शनिक की तरह बातें करने लगा जीवन के गूढ़ प्रश्नों पर, जो पहला समझ नहीं पाता
फिर दूसरे ने भाग-दौड़ कर बदलवाया अपना विभाग और पहले से मुक्ति पाई,
कि तभी छंटनी की सूची आई जिसमें दोनों का नाम था।

फिर बहुत दिनों बाद दिखने लगे दोनों साथ-साथ,
सिगरेट फूंकते हुए परेशान कभी गंभीर चर्चा में लीन,
चले जाते हुए एक-दूसरे का हाथ पकड़े, मुड़े-तुड़े कपड़ों में हवाई चप्पल पहने।
एक दिन नजर आए वे साथ-साथ एक जुलूस में नारे लगाते हुए,
जुलूस पर लाठीचार्ज में जब दूसरा हुआ घायल, तो पहले ने दिया उसे अपना खून।

धीरज कुमार, प्र०श्रे०लि०

सुनील कुमार शर्मा
सर्वेक्षक

स्वदेशी जी.पी.एस. : भारत के बढ़ते कदम

ग्लोबल पॉजिशनिंग प्रणाली (GPS) एक वैश्विक नौवहन उपग्रह प्रणाली होती है। अमेरिका के रक्षा विभाग द्वारा विकसित इस प्रणाली ने 27 अप्रैल 1995 से पूरी तरह से कार्य करना शुरू कर दिया था। वर्तमान में जी.पी.एस.का प्रयोग अनेक कार्यों में होने लगा है।

- इस प्रणाली का प्रमुख प्रयोग सर्वेक्षण एवं मानचित्रण (Surveying and Mapping), वाणिज्यिक कार्य, वैज्ञानिक प्रयोग, सर्विलेंस और ट्रैकिंग इत्यादि में होता है।
- आरंभ में इसका प्रयोग सैन्य कार्यों में होता था, बाद में नागरिक कार्यों में भी होने लगा।

<u>कार्य प्रणाली</u>

जी.पी.एस. रिसिवर अपनी स्थिति का आकलन पृथ्वी से उपर स्थित जी.पी.एस. उपग्रहों के समूह द्वारा लगातार भेजे जाने वाले संकेतों (Signals) के आधार पर करता है। रिसीवर प्रत्येक संदेश का ट्रांजिट समय भी दर्ज करता है और तद्नुसार उपग्रहों से दूरी की गणना करता है। रिसीवर बेहतर गणना के लिए कम से कम चार उपग्रहों का प्रयोग करता है, जिससे रिसीवर की त्रिआयामी (3-D) स्थिति- अक्षांश, देशांतर और ऊँचाई के बारे में पता चल जाता है।

जी.पी.एस. रिसिवर तीन प्रमुख क्षेत्रों-स्पेश सेगमेंट, कंट्रोल सेगमेंट एवं यूजर सेगमेंट से मिलकर बना होता है। वर्तमान मे इस का प्रयोग निम्न क्षेत्रों में हो रहा है:-

- रेलवे यात्री सूचना प्रणाली
- रेडियो टैक्सी सेवा
- परिवहन निगम बसों की ट्रैकिंग इत्यादि

<u>स्वदेशी जी.पी.एस. (IRNSS)</u>

अमेरिकी जी.पी.एस. की तरह भारत ने खुद का नेविगेशन सिस्टम, आई.आर.एन. एस.एस. (INRSS-Indian Regional Navigational Satellite System) शुरू करने की दिशा में अपना कदम मजबूती से बढ़ा दिया है। इसरो (ISRO) ने अपनी इस महत्वाकांक्षी योजना के लिए निर्धारित कुल सात उपग्रहों में से न्यूनतम आवश्यक चार उपग्रहों को उनकी कक्षा में स्थापित कर दिया है। चार उपग्रह IRNSS का काम शुरू करने के लिए पर्याप्त होंगे, बाकी तीन उपग्रह उसे सटीक एवं कुशल बनाते हुए इसे अमेरिकी जी.पी.एस. प्रणाली के समकक्ष

खड़ा करेंगे। इसके चारों उपग्रहों का प्रेक्षेपण क्रमशः 1 जुलाई 2013, 4 एवं 16 अप्रैल, 2014 तथा 28 मार्च 2015 को किया गया।

IRNSS प्रणाली को इस वर्ष पूरा करने की योजना बनाई गई है। यह दक्षिण एशिया पर फोकस होगा एवं देश के साथ ही उसकी सीमा से 1,500 किलोमीटर तक के उपयोगकर्त्ताओं की सटीक स्थिति की जानकारी उपलब्ध कराएगा।

IRNSS प्रणाली से दो तरह की सेवाएँ उपलब्ध होंगी। **प्रथम**-मानक पॉजिशनिंग सर्विस-सभी उपयोग कर्त्ताओं के लिए। **दूसरा**- सीमित सेवा, जो कूट सेवा होगी, केवल अधिकृत उपयोगकर्त्ताओं के लिए। यह प्रणाली अमेरिका के जी.पी.एस., रूस के ग्लोनक्स, यूरोप के गैलिलियो, चीन के बीदपू सैटेलाईट नेविगेशन सिस्टम इत्यादि के समकक्ष हैं।

<u>स्वदेशी IRNSS के फायदे:-</u>

1. नया बाजार मिलेगा :- देश में खुद का अपना जी.पी.एस. सिस्टम विकसित होने के बाद भारत प्रक्षेपण यान की तरह जी.पी.एस. सेवाएँ दूसरे देशों को दे सकेगा। भारत फिलहाल अन्य देशाों को सेटेलाइट प्रेक्षेपण सर्विस मुहैया कराता है।
2. सुरक्षा की दृष्टि से अहम :- स्वदेशी जी.पी.एस. का होना इसलिए भी अहम है, क्योंकि आपात या मुश्किल समय में विदेशी नियंत्रण वाले जी.पी.एस सिस्टम से प्राप्त जानकारी पर ज्यादा भरोसा नहीं किया जा सकता। कारगिल युद्ध के समय भारीय सेना अमेरिकी जी.पी.एस. पर निर्भर थी।
3. जी.पी.एस. आधारित सेवा को बढ़ावा :- भारत में इंटरनेट एवं स्मार्टफोन यूजर्स 35 करोड़ हैं। इसलिए स्मार्टफोन जी.पी.एस. एवं वाहन नेविगेशन में इसके उपयोग को बढ़ावा मिलेगा।
4. प्राकृति आपदा के समय खोज एवं बचाव अभियान में बेहतर समन्यवय बनाया जा सकता है।
5. सरकार इसकी मदद से Mapping और Location आधारित सेवाओं इत्यादि जैसे दैनिक कार्यों पर नजर रख सकेगी।
6. अपना GPS सिस्टम विकसित होने से स्थानीय कंपनियाँ Geo-service विकसित कर अपनी सेवा के जरिए राजस्व एकत्रित कर सकती है।
7. इस के जरिये नए उत्पाद एवं सेवाओं के विकसित होने से अर्थव्यवस्था को भी फायदा होगा तथा सरकारी परियोजनाओं में मितव्यता भी आएगी।

<u>सारंश</u>

इसके जरिए स्थलीय एवं समुद्री नेविगेशन, आपदा प्रबंधन, वाहन ट्रेकिंग, पर्वतारोहियों एवं यात्रियों के लिए दिशा संबंधी सहायता, गोताखोरों के लिए दृश्य एवं आवाज नेविगेशन सुविधा आदि कम लागत पर उपलब्ध होगी।

मेरा भारत प्यारा

देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से यह न्यारा है।
विविधता में एकता, समता, मानवता, पवित्रता, अखण्डता
और धर्मनिरपेक्षता इसकी जीवन धारा है।
पहाड़, जंगल, नदी, तालाब, बाग-बगीचे, झरने गुलाब
सबने भारत का पाँव पखारा है।
देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से यह न्यारा है।
गाँधी सुभाष, नेहरू, चन्द्रशेखर
लाल, बाल, पाल और अम्बेदकर
भगत ने फाँसी के फंदे को ललकारा है।
देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से यह न्यारा है।
कोयल, कबूतर, हंस, मोर।
गाय, बैल, बाघ शेर
सब कुछ आज तुम्हारा है।
फौलाद तेरी आत्मा
दुश्मनों का करने खातमा
शरहद ने तुझे पुकारा है।
देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से यह न्यारा है।
झोपड़ी, महल, कुटी घर
सोते हैं हम हो के निडर
खुशियों से भरा आज
गलियाँ और चौबारा है।
मंदिर, मस्जिद, चर्च गुरूद्वारे
सब में आस्था है हमारे
सुख शांति और समृद्धि का संदेश पसारा है।
देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से यह न्यारा है।
महम्मद रफी, लता मंगेशकर, बिसमिल्ला खॉ और तेंदुलकर सबने देश को संवारा है।
अब्दुल कलाम ने देश को निखारा है।
देश हमारा भारत प्यारा, सब देशों से यह न्यारा है।

- **अरूण कुमार विश्वास,** प्रवर श्रेणी लिपिक -

महकते फूल

दुश्मनी लाख सही, खत्म न करना रिश्ता।
दिल मिलें या न मिलें, हाथ मिलाते रहिए।।
***
मुहब्बत एक खुश्बू है, हमेशा साथ चलती है
कोई इन्सां तन्हाई में भी तन्हा नहीं रहता।।
***
आ! मेरी मौत मेरी जान बचा ले आकर
ज़िन्दगी रोज़ मुझे जेरो-ज़बर[1] करती है।।
***
घर से निकलो तो पता जेब मे रख कर निकलो।
हादसा चेहरे की पहचान मिटा देता है।।
***
ज़लज़ला तो ऊँची इमारत को गिरा सकता है।
मैं तो बुनियाद का पत्थर हूँ, मुझे खौफ नहीं।।
***
खुदा उस डूबने वाले की हिम्मत को जवान रखे
कि साहिल के क़रीब आकर जिसे साहिल नहीं मिलता।।
***
जिन्दगी ऐसी हो कि दुश्मनों को रश्क हो।
मौत हो ऐसी कि दुनिया देर तक मातम करे।।
***
कोई हाथ भी न मिलाएगा जो गले मिलोगे तपाक से।
यह नए मिजाज़ का शहर है, ज़रा फासले से मिला करो।।
***
यह कह देना समन्दर से हम ओस के मोती हैं।
दरिया की तरह तुझ से मिलने नहीं आऐंगे।।
***
रोज़ तारों को नुमाईश में खलल पड़ता है।
चाँद पागल है, अन्धेरे में निकल पड़ता है।।
***
ये सायादार पेड़ जमाने के काम आऐं।
यह सूख भी जाऐं तो जलाने के काम आऐं।।

संकलन- मो० शब्बर अली तैयब, प्र०श्रे०लि०

1. परेशान 2. अभिमान

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

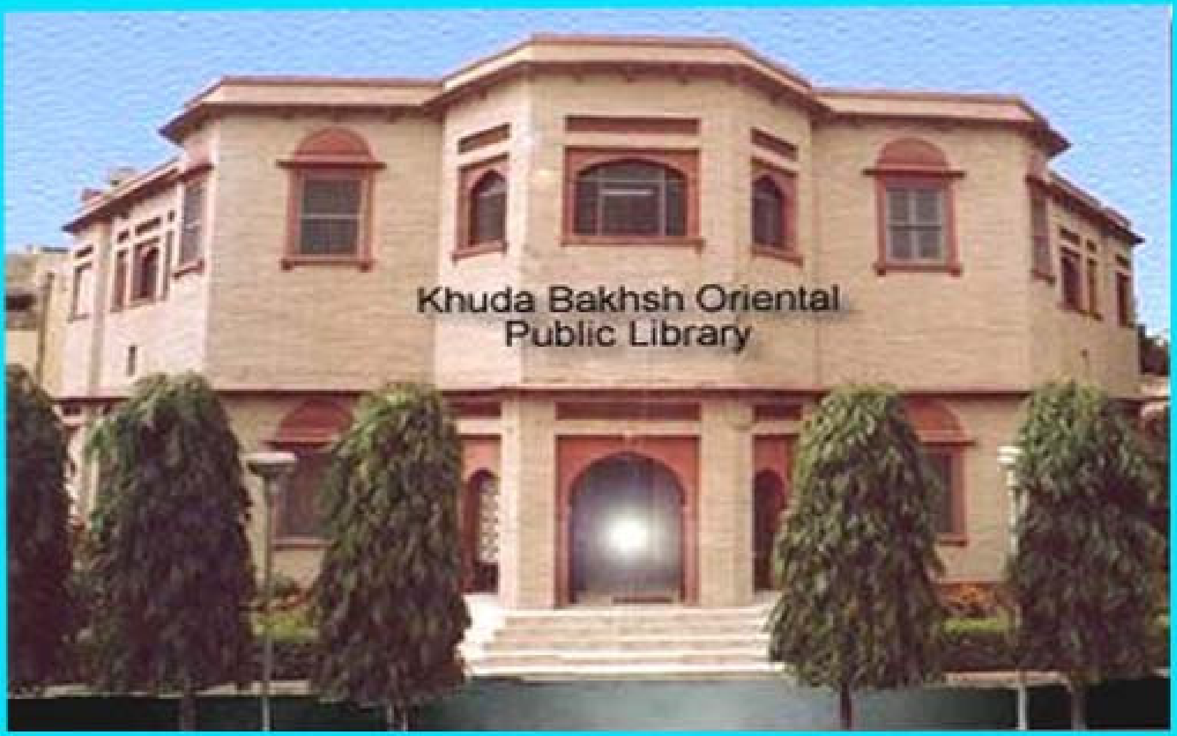
Khuda Bakhsh Oriental
Public Library

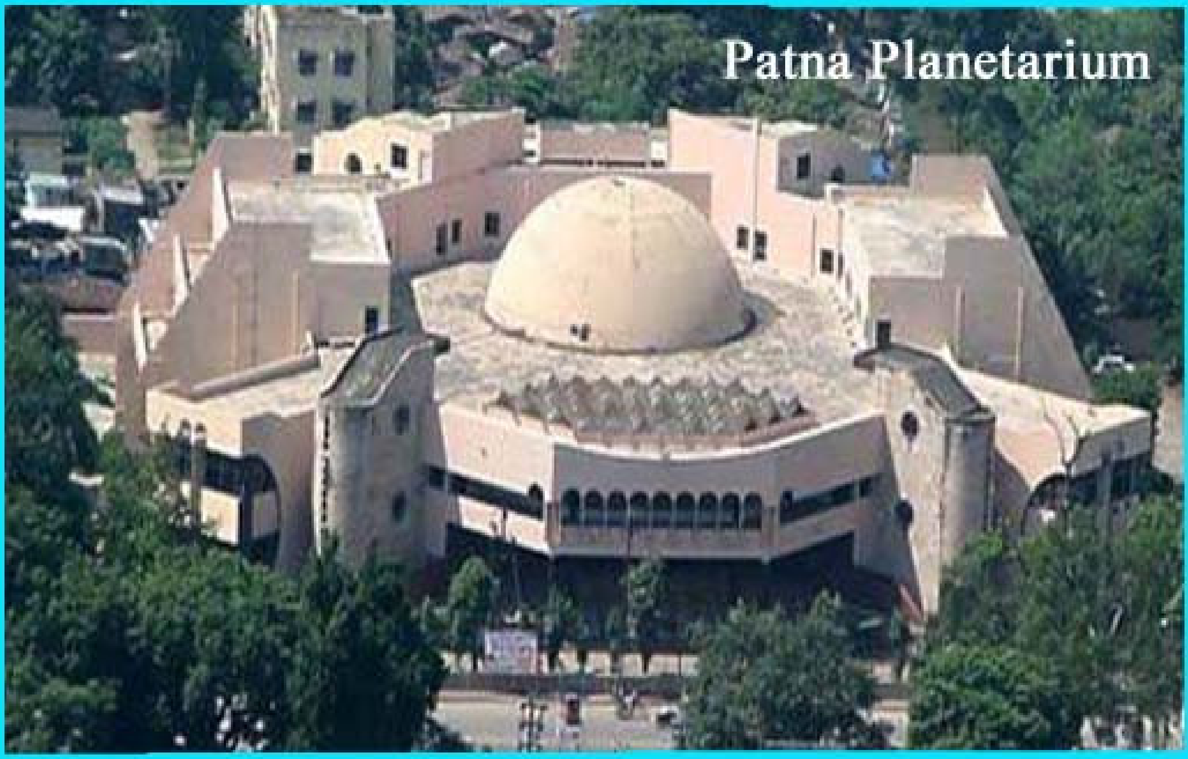
Patna Planetarium